वर्ष 2022
अंक-4

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

दर्पण

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

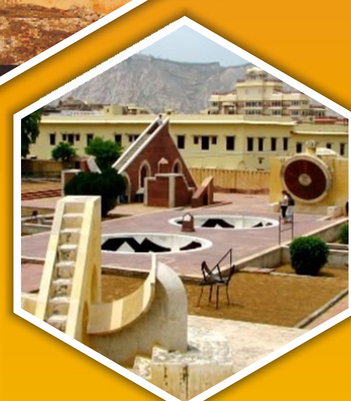

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-2, जयपुर

(संयोजक : उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय, जयपुर)

दर्पण

सम्पादक मण्डल

मुख्य संरक्षक
श्री विजय शर्मा
महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे
एवं अध्यक्ष नराकास कार्यालय-2, जयपुर

संरक्षक
श्री गौतम अरोरा
अपर महाप्रबंधक, उ.प. रेलवे
एवं उपाध्यक्ष नराकास कार्यालय-2, जयपुर

परामर्शदाता
श्री बृजेश कुमार गुप्ता
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/ निर्माण

प्रधान सम्पादक
श्रीमती प्रज्ञा पालीवाल गौड़
अपर महानिदेशक (रीजन)
पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर

श्री राजपाल सिंह
निदेशक
कदन्न विकास निदेशालय

श्रीमती निर्मला पारीक
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं उप मुख्य इंजीनियर/सामान्य, उ.प.रे.

श्री राम सुशील सिंह
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
एवं सचिव नराकास कार्यालय-2, जयपुर

श्री अरविंद कुमार शर्मा
टीजीटी (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय नं.-3, जयपुर

विजय शर्मा
महाप्रबंधक
Vijay Sharma
GENERAL MANAGER
एवं अध्यक्ष, नराकास (कार्यालय-2)

सत्यमेव जयते

उत्तर पश्चिम रेलवे
प्रधान कार्यालय, जवाहर सर्किल के पास
मालवीय नगर, जयपुर-302017

NORTH WESTERN RAILWAY
Headquarter Office, Near Jawahar Circle
Malviya Nagar, JAIPUR-302017
Ph.: 0141-2725800 (Off.)
0141-2725816 (Fax)

अध्यक्ष की कलम से.....

मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2) द्वारा 'दर्पण' पत्रिका के चौथे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। 'दर्पण' पत्रिका के माध्यम से केन्द्रीय कार्यालय में राजभाषा हिंदी में किये जा रहे कार्यों को हम साझा कर रहे हैं तो दूसरी ओर अधिकारियों/ कर्मचारियों को अपने लेख, कविता तथा लेखन के लिए एक सशक्त माध्यम मिल रहा है, जिससे उनमें सृजनात्मकता क्षमता बढ़ने के साथ-साथ हिंदी के प्रति रुचि भी बढ़ेगी और अन्य अधिकारी/ कर्मचारी भी लाभान्वित होंगे।

हमारा संवैधानिक कर्त्तव्य है कि हम संविधान में निहित भावनाओं का सम्मान करते हुए अपने दैनिक सरकारी कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। मौजूदा परिवेश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए देश की विभिन्न भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए संवैधानिक प्रावधानों के अनुरूप राजभाषा हिंदी को समृद्ध बनाने का प्रयास करें।

मैं 'दर्पण' ई-पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों को बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपने अथक प्रयास से पत्रिका का प्रकाशन किया।

शुभकामनाओं सहित।

(विजय शर्मा)

संपादकीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-2 द्वारा प्रारंभ की गई पत्रिका ''दर्पण'' का यह अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। पिछले तीन अंकों की लोप्रियता व आप सुधी पाठकों के उत्साह को देखते हुए इस पत्रिका के स्वरूप को और निखारने के प्रयास किए गए हैं।

यह पत्रिका आपके हाथों में नववर्ष 2022 में आ रही है जो कि एक महत्वपूर्ण वर्ष है। यह वर्ष हमारे राष्ट्र की जीवनयात्रा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पड़ाव है। आज हम सब अपनी आजादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। आजादी का अमृत महोत्सव एक प्रतीक है, एक पड़ाव है देश को आजादी दिलाने वाले स्वाधीनता सेनानियों के पुण्य स्मरण का, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। साथ ही यह देश के बहादुर सैनिकों को भी नमन करने का अवसर है जो हमारे देश की सीमाओं को अपने अदम्य साहस से अटूट और अक्षुण्ण रखे हुए हैं।

यह अवसर हमारे देश की प्रगति और उन्नति का भी अवलोकन और गर्व करने का है। बीते कुछ वर्षों में राष्ट्र ने प्रगति के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। आजादी का अमृत महोत्सव इन्हीं प्रतिमानों पर गर्व करने और देश को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देने का भी है।

देश की विकास गाथा का अभिन्न अंग राजभाषा भी है जो कि देश की आर्थिक प्रगति और प्रशासनिक उद्देश्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

हम सब को अपनी राजभाषा पर गर्व है, आइए हम इस संकल्प को आजादी के अमृत महोत्सव पर पुनः दोहराएं कि हम इसको पुष्ट करने में अधिक से अधिक योगदान देंगे।

अंत में, पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन को मूर्त रूप देने वाले विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्षों, संपादक मंडल के सभी सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिसके कारण इस पत्रिका का प्रकाशन हा सका है।

- डॉ. प्रज्ञा पालीवाल गौड़
अपर महानिदेशक (रीजन)
पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर

सचिव की कलम से.....

हिंदी वार्षिक पत्रिका ''दर्पण'' के चौथे अंक के माध्यम से आप सभी प्रबुद्ध पाठकगण से संवाद करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पत्रिका में उच्च कोटि की रचनाओं को शामिल करने का प्रयास किया गया है। हमें आशा है कि आप सभी को अच्छा लगेगा।

इस अंक में ''रेल आधुनिकीकरण का सुनहरा सफर'' में रेलवे के विभिन्न आयामों, ''स्वस्थ जीवन का आधार'' में मोटे व पौष्टिक अनाज की उपज एवं पौष्टिकता तथा ''भारत के एकीकरण'' में स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान का विवरण मिलता है। इसी प्रकार ''शुष्क क्षेत्रों में जलभृत मानचित्रण'' में असंतृप्त जलभृतों की जानकारी के साथ ताजा और खारा भूजल क्षेत्रों की पहचान व जल संरक्षण की जानकारी दी गई है। ''सबक'' कहानी में सूर्यकांत के निश्छल मन का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है, जो उसे संस्कारवान परिवार से मिला है। वहीं दूसरी ओर वह पग-पग पर देय सुविधा शुल्क से अनभिज्ञ होता है और संसार में व्याप्त इन बुराइयों से झल्ला जाता है। फिर भी, वह मन में दृढ़ निश्चय कर अपने सिद्धांत पर अडिग रहने का संकल्प लेते हुए नियुक्ति स्थल के लिए रवाना हो जाता है।

''हड़ाई मत करो'' में बच्चों पर माता-पिता के संस्कार का प्रभाव, ''जीवन में विनम्रता'' से सफलता प्राप्ति, ''पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक'' में संयुक्त परिवार की महत्ता का चित्रण देखने को मिलता है। ''धन्यवाद कहिए'' में सकारात्मक व्यक्तित्व का वर्णन और ''बच्चों ! तुम कब आओगे'' में बच्चों को अपने दोस्तों से मनोभावों को साझा करने की व्यथा झलकती है।

इसी प्रकार ''हिंदी हम सब की पहचान'' कविता में हिंदी की महत्ता बताई गई है तो ''क्या था देश'' में माँ, मातृभाषा, संस्कृति, धरा व जीवन-यापन के रूप में उल्लेख किया गया। ''एक संदेश'', ''फूल और तितली'', ''जिंदगी'', ''उठो नारी तुम कमजोर नहीं हो'', ''अपनी प्यारी भाषा हिंदी'', ''दुनियां एक मेला'', ''कोरोना महामारी और हमारी बारी'' और ''अच्छी बातें'' आदि सभी सद्भावों से ओतप्रोत हैं।

मैं माननीय महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष महोदय (नराकास) का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके कुशल नेतृत्व में नगर राजभाषा कार्यान्वन समिति की सभी गतिविधियों का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। मैं माननीय मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री बृजेश कुमार गुप्ता का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके परामर्श और नित नई पहल से हम राजभाषा के प्रचार-प्रसार करने में सफल हो रहे हैं।

मैं विद्वान लेखकों व रचनाकारों का भी आभार प्रेषित करता हूँ जिनके सहयोग के बिना पत्रिका का प्रकाशन किया जाना असंभव था।

आशा है कि आप सभी का भविष्य में भी इसी भाँति मार्गदर्शन व सहयोग मिलता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

(राम सुशील सिंह)
सचिव, नराकास एवं वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
उ.प. रेलवे प्रधान कार्यालय, जयपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-2, जयपुर

दर्पण

संयोजक कार्यालय : राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, उत्तर-पश्चिम रेलवे, जयपुर

अंक : 4, वर्ष – 2022

मुख्य संरक्षक
विजय शर्मा
महाप्रबंधक

संरक्षक
गौतम अरोरा
अपर महाप्रबंधक

परामर्शदाता
बृजेश कुमार गुप्ता
मुख्य राजभाषा अधिकारी

प्रधान संपादक
डॉ. प्रज्ञा पालीवाल गौड़
अपर महानिदेशक,
पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर

संपादक
राम सुशील सिंह
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

संपादक मंडल
बृज मोहन मीना, अंजु शर्मा
राकेश बाबू, एन.डी. पुरोहित
वरिष्ठ अनुवादक

संपर्क सूत्र
राजभाषा विभाग, उत्तर पश्चिम रेलवे
प्रधान कार्यालय, जयपुर
मो. नं. 9001195029/46

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
1.	रेल आधुनिकीकरण का सुनहरा सफर-कल और आज	घनश्याम कुमावत	07
2.	स्वस्थ जीवन का आधार : ''मोटे एवं पौष्टिक अनाज''	रा.पा. सिंह डॉ. राम नारायण अहिरवार साजित अहमद उस्ता	09
3.	भारत के एकीकरण में स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान	दीपक कुमार	11
4.	शुष्क क्षेत्रों में जलभृत मानचित्रण एवं प्रबंधन के लिए....	कंवर प्रदयुमन सिंह	13
5.	'सबक'	निर्मल कुमार शर्मा	15
6.	अस्तेय	(साभार-जीवन वेद से)	19
7.	जीवन में विनम्रता से सफल लक्ष्य की प्राप्ति	मो. रियाज़ अनवर	20
8.	फोटो फिचर	---	21
9.	पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक	कामेश्वर पाण्डेय	25
10.	हडाई मत करो	श्रीमती सरिता जानू	27
11.	धन्यवाद कहिए	वीरेन्द्र कुमार परिहार	28
12.	बच्चों ! तुम कब आओगे ?	मीनाक्षी हल्दानियाँ	30
13.	हिंदी हम सब की पहचान	- डॉ. अरविंद कुमार शर्मा	31
14.	क्या था देश ?	अजय सिंह तोमर	32
15.	एक सन्देश	तुंग नाथ त्रिपाठी	33
16.	फूल और तितली	ममता रेबारी	34
17.	जिंदगी	शकुंतला शर्मा	35
18.	उठो नारी तुम कमजोर नहीं हो	श्रीमती सरिता जानू	36
19.	अपनी प्यारी भाषा हिन्दी	शिवानी शुक्ला	37
20.	''दुनिया एक मेला है''	अरविंद कुमावत	38
21.	कोरोना महामारी और हमारी बारी	योगिता शर्मा	39
22.	अच्छी बातें	पवन कुमार वर्मा	40
23.	अमर सूक्ति कोश	---	41

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं, कविता आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों व रचनाकारों के अपने हैं जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है। - संपादक मंडल

रेल आधुनिकीकरण का सुनहरा सफर–कल और आज

(प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत निबंध)

घनश्याम कुमावत
तकनीशियन-II, टी.आर. डिपो, फुलेरा, जयपुर मंडल

भारत में वर्ष 1853 में शुरु हुआ भारतीय रेल का सफर स्वयं भारत का एक प्रकार से आधुनिकीकरण ही था। उसे समय से शुरू हुआ सफर विभिन्न सोपानों को पार करते हुए, नित नए आयाम स्थापित करते हुए राष्ट्र की जीवन रेखा के रूप में निरन्तर स्वयं को सिद्ध करता रहा है। भारतीय रेल के कारण भारत की प्रगति को मानों पंख लग गये हों। जन सामान्य को सुविधाएँ पहुँचाते हुए भारतीय रेल ने स्वयं को समय के अनुसार निरन्तर आधुनिक बनाए रखा और न सिर्फ आधुनिक बनाए रखा बल्कि स्वयं अपने लिए उच्चतम लक्ष्य तय कर, तय समय में उन्हें प्राप्त करने में भी कोई कोर-कसर नहीं रखी है। आज भारतीय रेल के 150 वर्ष से अधिक के सफर को जब हम देखते हैं तो आधुनिकीकरण की मिसाल देने के लिए भारतीय रेल से श्रेष्ठ अन्य कोई उदाहरण नहीं है।

भारतीय रेल जो कि एक भाप के इंजन से प्रारम्भ हुई, वह इंजन जो आयातित था थोड़े ही वर्षों में स्वयं रेलवे द्वारा उन्हें अपनी आवश्यकतानुसार निर्मित करना भी प्रारम्भ कर दिया। इंजन बनाने में अन्य किसी पर आश्रित होने के स्थान पर निरन्तर प्रगति करते हुए आधुनिकतम संसाधनों एवं तकनीक का प्रयोग करते हुए डीजल इंजन और फिर विद्युत इंजनों के निर्माण में प्रवीणता प्राप्त की और अभी कुछ ही वर्षों में 12000 हॉर्स पावर का शक्तिशाली इंजन तैयार कर लिया है। भारतीय रेल का इस प्रकार से रेलों के इंजनों का आधुनिकीकरण न सिर्फ आर्थिक पहलू से महत्त्वपूर्ण है बल्कि भारत के वर्ष 2030 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन के अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सहायक है।

पिछले वर्षों में भारतीय रेल में हुए विभिन्न प्रकार के आधुनिकीकरण में से मैं सबसे महत्त्वपूर्ण ''बायो टॉयलेट'' को मानता हूँ। वर्ष 1891 में प्रथम श्रेणी यात्री डिब्बों में लगाना शुरू हुए। सामान्य शौचालय जो एक रेल यात्री के सुझाव के पश्चात् 1909 से अन्य डिब्बों में लगना शुरू हुए यात्रियों के लिए सुविधा तो प्रदान कर रहे थे परन्तु स्टेशन पर स्वच्छता के लिए अत्यधिक संसाधन लगाने पड़ते थे। भारतीय रेल ने स्वयं को ही लक्ष्य देकर अपने तय समय में सम्पूर्ण यात्री डिब्बों में बायो टॉयलेट स्थापित कर लिए हैं, जो कि वैश्विक मापदण्डों के समकक्ष सुविधा प्रदान कर रहे हैं।

आधुनिकीकरण की दिशा में बढ़ते हुए भारतीय रेल जो कभी कोयले पर आश्रित थी और फिर डीजल पर आश्रित रही अब पूर्ण रूप से विद्युतीकरण के अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। भारतीय रेल ने अपने चिर परिचित अन्दाज में अपने लिए वर्ष 2023 का लक्ष्य तय किया है। भारतीय रेल यात्रियों एवं माल परिवहन के लिए सदैव सजग रहकर निरन्तर प्रयासरत रहती है नित नए उपाय इस दिशा में किये जा रहे हैं कि यात्रियों एवं सामान परिवहनकर्ताओं के समय की बचत होवे। इसके लिए रेलवे ने अपने रेल कोच डिब्बों में टसक बोगी का प्रावधान किया है, पटरियों में सुधार किया जा रहा है, निश्चित समय सीमा में मानव रहित फाटक तो समाप्त ही कर दिये गये हैं।

यात्री सुविधाओं में निरन्तर विस्तार करते हुए आम डिब्बों से शुरू हुए सफर में वातानुकुलित डिब्बे लगे, स्मार्ट कोच बनाए गये। तेजस एक्सप्रेस, हमसफर एक्सप्रेस, राजधानी एक्सप्रेस, शताब्दी एक्सप्रेस जैसी ट्रेनों ने यात्रियों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएँ प्रदान की हैं। हमारी डेकन औडीसी, पैलेस ऑन व्हील्स ट्रेनों को विश्व की 25 आधुनिक सुविधाओं वाली सूची में शामिल किया गया है। परिचालन के क्षेत्र में सिगनल सिस्टम में निरन्तर आधुनिकता बनाई रखी गई और वर्तमान में उपलब्ध आधुनिकतम तकनीक ऑटोमेटिक सिगनल सिस्टम का उपयोग यात्री सुविधाओं और माल परिवहन को सरल बनाने में किया जा रहा है।

यह भारतीय रेल की ही विशेषता है कि अपनी कमियों को पहचान कर दूर करने के प्रयास समय रहते ही कर लिये जाते हैं। यात्री गाडियों को प्रथम प्राथमिकता पर रखने से माल परिवहन में देर होती थी तो इस समस्या को दूर करने के लिए भारत में ''समर्पित माल भाड़ा गलियारा'' की अवधारणा लाकर इसे मूर्त रूप दिया गया।

प्रथम बार दो स्टेशनों के बीच शुरू हुई भारतीय रेल के आज 7500 से अधिक रेलवे स्टेशन हैं। 13 लाख से अधिक कर्मचारियों के साथ दुनिया का बड़ा नियोक्ता है। रेलवे स्टेशनों पर हम भारतीय रेल के सुनहरे सफर को आसानी से महसूस कर सकते हैं। आज रेलवे स्टेशनों

पर एस्केलेटर, लिफ्ट, वाई-फाई, फूड प्लाजा, बैटरी चालित वाहन, सुसज्जित भवन उपलब्ध है।

रेल यात्रियों ने इस सुनहरे सफर को इतने अच्छे तरीके से महसूस किया है कि उन्हें तब की चीजें आज भी अच्छी लगती हैं जैसे तब की गत्ते वाली टिकट के लिए लाइन में लगना और उस पर तारीख डालने वाली मशीन से डलने वाली तारीख को आज भी याद करते हैं। आज जब UTS मशीनों द्वारा आधुनिक प्रणाली का उपयोग कर तुरन्त टिकट प्राप्त हो रही है तब भी वह दौर प्रासंगिक है। आरक्षण के फार्म भरना और लाइन में लगकर आरक्षण करवाना को भारतीय रेलवे की सूचना क्रान्ति ने पूर्णतया बदल कर यात्रियों को कभी भी कहीं से भी आरक्षण करवाने की सुविधा प्रदान की है। रेल यात्रियों को अब पूछताछ के लिए ''पूछताछ खिड़की'' पर जाने की जरूरत नहीं बल्कि 139 की सुविधा और ''रेल मदद'' जैसी आधुनिक एप उनसे बिल्कुल भी दूर नहीं रही है।

भारतीय रेलवे ने नवीनतम तकनीक का उपयोग न केवल अपनी सुविधाओं में ईजाफा करने के लिए किया है बल्कि स्वयं का विस्तार करने में भी किया है। नैरोगेज, मीटरगेज और ब्रॉडगेज उसके मुख्य सोपान हैं। आज विश्व की आधुनिकतम तकनीक का उपयोग करते हुए चिनाब नदी पर विश्व का सबसे ऊँचा रेल पुल बन रहा है जो कि भारतीय रेलवे के दृढ़ संकल्प व समर्पण का द्योतक है। भारतीय रेलवे की इस विकास यात्रा में CLW, BLW, RCF, ICF, RWF, MCF, DMW, RDSO आदि अपने-अपने रूप से योगदान दे रहे हैं।

ऐसा नहीं है कि विकास यात्रा में भारतीय रेल ने अपनी विरासत को भुला दिया हो। इस आधुनिकीकरण के यज्ञ में भी अपनी विरासत को पूर्ण रूप से सम्भाल कर रखना कोई भी भारतीय रेल से सीख सकता है। इसका एक उदाहरण है कि भारत का प्रथम स्टीम इंजन ''फेयरी क्वीन'' आज भी कार्यरत अवस्था में है। आधुनिक तकनीक के माध्यम से विभिन्न माध्यमों से विरासत को संजोया गया है।

रेल यात्रियों की सुविधा एवं माल परिवहन में नई तकनीक के उपयोग में रेलवे निरन्तर अपने ढाँचे को भी आधुनिक बनाये रखता है। इसी कड़ी में कार्यालय पत्राचार में पारम्परिक प्रणाली को आधुनिक रूप देते हुए सूचना क्रान्ति का अग्रदूत बनने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई है। आज सामान्य पत्राचार ''ई-डाक'' से एवं फाइल मूवमेन्ट ''ई-ऑफिस'' के माध्यम से किया जा रहा है। बड़े-बड़े दस्तावेज अब सिमटकर हार्डडिस्क में जमा हो गये हैं। कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रकार की एप "RESS", "HRMS" का प्रावधान किया गया है जिससे न केवल मानव श्रम की बचत हुई है समय की भी बचत हुई है।

भारतीय रेलवे ने अपने लम्बे सफर में अपने आपको सदैव आधुनिक बनाए रखा और निरन्तर विकास यात्रा पर अग्रसर रही है। भाप के इन्जन से शुरू हुआ सफर आज से भी हाई स्पीड ट्रेन सेट ''ट्रेन-18'' तक आ गया है और आने वाला कल बुलेट ट्रेन का है। अपने पूर्व के रिकॉर्ड को देखते हुए यह लक्ष्य ज्यादा दूर नहीं है। अपनी निरन्तर आधुनिकीकरण की यात्रा जिसे सुनहरी यात्रा ही कहा जाएगा कल, आज, कल और कल को पूर्णत: सिद्ध करती है।

स्वस्थ जीवन का आधार : ''मोटे एवं पौष्टिक अनाज''

कदन्न विकास निदेशालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, जयपुर

रा.पा. सिंह
निदेशक

डॉ. राम नारायण अहिरवार
वरिष्ठ तकनीकी सहायक

साजित अहमद उस्ता
आशुलिपिक-III

1. पौष्टिक एवं मोटे अनाज को सुपर फूड कहा जाता है, क्योंकि ये अनाज बेहतर पोषण गुणों के कारण गेहूँ और चावल जैसे अनाजों से बेहतर है। आयरन, जिंक, पोलिक एसिड, कैल्शियम, फोस्फोरस, कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन से सम्बन्धित स्वास्थ्य समस्याओं के अलावा टाइप-II मधुमेह के प्रबंधन में भी पौष्टिक अनाज बहुत प्रभावी है। हमारे देश में दो करोड़ से अधिक किसान पौष्टिक एवं मोटे अनाजों की खेती करते हैं, जिनमें से एक करोड़ से अधिक पौष्टिक अनाज फसलों और एक करोड़ से कम मोटे अनाज फसलों की खेती करते हैं। इसके अलावा ये फसलें मूल्य संवर्धन (Value Addition) के माध्यम से बहुत से लोगों को रोजगार प्रदान करती हैं। इन सभी मोटे एवं पौष्टिक अनाजों के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए व्यापक जागरूकता पैदा करने और कदन्न को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2023 को 'अन्तर्राष्ट्रीय कदन्न वर्ष' (YOM) के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है।

2. विश्व में लगभग 189 देशों द्वारा 3183.76लाख हैक्टेयर के औसत क्षेत्र में पौष्टिक एवं मोटे अनाजों की खेती की जाती है, जिसमें से 128 देशों द्वारा 733.25 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में पौष्टिक अनाज की खेती होती है। पौष्टिक एवं मोटे अनाजों का उत्पादन लगभग 1356137 लाख टन है, जिसमें 901.13 लाख इन पौष्टिक अनाजों का उत्पादन है। पौष्टिक एवं मोटे अनाजों की उत्पादकता 4261 किग्रा./हैक्टेयर है, जबकि पौष्टिक अनाजों की उत्पादकता 1229 किग्रा./हैक्टेयर है।

3. हमारे देश में मोटे एवं पौष्टिक अनाजों (कदन्न) की खेती औसतन 129.63 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में की जाती है (140.65 लाख हैक्टेयर पौष्टिक अनाज), उत्पादन लगभग 439.85 लाख टन है। (155.81 लाख टन पौष्टिक अनाज), उत्पादकता 1836 किग्रा./हेक्टेयर (पौष्टिक अनाज 1108 किग्रा./हैक्टेयर) है। देश भर में सर्वाधिक रकबा राजस्थान राज्य (59.24 लाख हेक्टेयर) का है, इसके बाद क्रमश: महाराष्ट्र (55.50 लाख हेक्टेयर) एवं कर्नाटक (32.23 लाख हेक्टेयर) राज्य आते हैं, उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान राज्य (67.20 लाख हेक्टेयर) एवं कर्नाटक (32.23 लाख हेक्टेयर) राज्य आते हैं, उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान राज्य (67.20 लाख टन) प्रथम स्थान है, उसके पश्चात कर्नाटका (59.63 लाख टन) एवं मध्यप्रदेश (48.19 लाख टन) राज्यों का स्थान आता है। उत्पादकता में पश्चिम बंगाल (5373 किग्रा./हेक्टेयर) का प्रथम स्थान है, इसके बाद आंध्रप्रदेश (4284 किग्रा./हेक्टेयर) एवं पंजाब (3674 किग्रा./हेक्टेयर) राज्य आते हैं।

4. केन्द्र प्रायोजित योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (रा. खा. सु. मि.) मोटे अनाज को 2014-15 से 26 राज्यों एवं 1 केन्द्र शासित प्रदेश में लागू किया गया है। रा. खा. सु. मि. मोटे अनाज के तहत पौष्टिक अनाज 2017-18 तक जारी रहे। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन पर उप.मिशन : पौष्टिक अनाज 2018-19 से 14 राज्यों, 7 पूर्वोत्तर राज्यों, एक पहाड़ी राज्य और दो केन्द्र शासित प्रदेशों में लागू किया गया है। पूर्वोत्तर राज्यों में पौष्टिक अनाजों के कार्यक्रम को लागू करने के लिए लचीलापन दिया गया है।

इन कार्यक्रमों की लागत सामान्य श्रेणी के राज्यों के लिए 60:40 के आधार पर और उत्तर-पूर्व और पहाड़ी राज्यों के लिए 90:10 के आधार पर साझा की जाती है। केन्द्रे सरकार की एजेंसियों को भारत सरकार द्वारा 100% वित्त पोषित किया जाता है। किसानों को रा. खा. सु. मि. मोटे अनाजों के तहत मक्का और जौ के बेहतर पैकेज का प्रदर्शन, मक्का और जौ की अंतरफसल पर प्रदर्शन, अत्यधिक उपज देने वाली किस्मों (HVYs) के बीजों के प्रमाणित बीज वितरण (10 वर्ष से कम

उम्र के) मक्का के संकर बीजों के प्रमाणित बीज का वितरण और रा. खा. सु. मि. पौष्टिक अनाज गतिविधियाँ, जैसे प्रदर्शन, बीज वितरण, बीज उत्पादन, संयंत्र और मृदा संरक्षण प्रबंधन, संसाधन संरक्षण तकनीक/उपकरण, जल अनुप्रयोग उपकरण, फसल प्रणाली आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम/कार्यशाला/प्रचार, कथक उत्पादक समूह (FPOS) का गठन और प्रसंस्करण इकाइयों का निर्माण जैसी गतिविधियों को लागू करना।

5. रा. खा. सु. मि. : पौष्टिक एवं मोटे अनाज का मुख्य उद्देश्य इन फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि लाना है। इस योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जो रणनीतियाँ अपनाई जा रही हैं, वे हैं: किसानों के खेतों पर अग्रेखित प्रदर्शनों/ CFLDs/प्रदर्शनों, CM, INM, IPM एवं उन्नत शस्य क्रियाओं के माध्यम से नवीनतम उत्पादन और संरक्षण तकनीक का प्रसार, II) प्रमाणित बीजों की उपलब्धता में वृद्धि कर बीज प्रतिस्थापन दर में सुधार, III) उन्नत कृषि यंत्र वितरित कर मशीनीकरण को बढ़ावा देना, IV) जल अनुप्रयोग उपकरणों के वितरण के माध्यम से अतिरिक्त क्षेत्र को खेती के दायरे में ला कर सूक्ष्म सिंचाई को बढ़ावा देना, V) कदन्न कृषकों एवं प्रसार से जुड़े हुए विस्तार कर्मियों के राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमता का निर्माण और VI) रा. खा. सु. मि. के तहत दलहन और तिलहन के साथ अंतर-फसल के माध्यम से पौष्टिक एवं मोटे अनाजों का क्षेत्र बढ़ाना।

6. उपर्युक्त योजना की गतिविधियों को कार्यान्वित करने के लिए भारत सरकार द्वारा चालू वित्तीय वर्ष 2021-22 में लगभग राशि रु. 29632.63 लाख केन्द्रांश निर्धारित किया गया है, जिसमें से राशि रु. 26622.13 लाख राज्य सरकारों के लिए और शेष राशि रु. 3010.5 लाख केन्द्र सरकार की संस्थाओं के लिए दिया गया है।

भारत के एकीकरण में स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान
(प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कृत निबंध)

दीपक कुमार
कार्यालय अधीक्षक, कार्मिक/रेलवे भर्ती कक्ष, प्रका: जयपुर

यह सर्वविदित है कि भारत विविधताओं से भरा देश है। यहाँ सदियों से विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदाओं के लोग निवास करते आ रहे हैं। देश और राष्ट्र में अन्तर होता है। देश सीमाओं में बंधा होता है जबकि राष्ट्र जनता की भावनाओं से जुड़ा होता है। जनता की एकीकृत भावना एवं उद्देश्य से सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण होता है।

यह सर्वविदित है कि भारत 200 वर्षों तक अंग्रेजों की दासता में रहा था। भारत को स्वाधीनता दिलाने में स्वतंत्रता सेनानियों का अभूतपूर्व योगदान रहा था। स्वतंत्रता सेनानियों ने न सिर्फ भारत को अंग्रेजों की दासता से स्वाधीन करवाया अपितु भारतीयों को एकता के सूत्र में पिरोने का भी काम किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए यदि कोई सबसे कारगर हथियार था तो वह था एकता। स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत की जनता को एकजुट कर स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई लड़ी और भारत को आजाद कराया।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों से जनता को संगठित कर उन्हें स्वतंत्रता के प्रति जागरुक करते हुए कई स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। पश्चिम बंगाल की बात करें तो सुभाष चन्द्र बोस, अरविंद घोष, गुजरात की बात करें तो सरदार वल्लभ भाई पटेल, पंजाब की बात करें तो लाला लाजपतराय, हैदराबाद की बात करें तो सरोजनी नायडू, महाराष्ट्र की बात करें तो बाल गंगाधर तिलक आदि स्वतंत्रता सेनानियों ने क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर समाज संगठित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया एवं स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य को पूरा किया।

पूरे देश में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, देश के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू अन्य क्रांतिकारी नेता जैसे- वीरेन्द्र कुमार घोष, सत्येन्द्र नाथ बनर्जी, बंकिम चन्द्र चट्टोपध्याय, भगत सिंह, रास बिहारी बोस आदि स्वतंत्रता सेनानियों ने पूरे देश के जनमानस को एकत्रित कर क्रांति की लहर छेड़ दी, जिसके परिणाम स्वरूप भारत को स्वाधीनता प्राप्त हुई।

हमारे देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने पत्र-पत्रिकाओं आदि के माध्यम से भी भारत को एकीकरण करने का प्रयास किया, जिसमें वे सफल भी हुए। वीरेन्द्र कुमार घोष ने युगांतर पत्रिका के माध्यम से लोगों को संगठित होने के लिए प्रेरित किया तो मौलाना आजाद ने इंडिया विन्स फ्रीडम के माध्यम से। अरविंद घोष की वंदे मातरम पत्रिका ने लोगों को एक करने में एक देश भक्ति की भावना जागृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा रचित गीत जण गण मण एवं बंकिम चटर्जी द्वारा रचित वंदे मातरम गीत ने तत्समय स्वतंत्रता सेनानियों एवं जनमानस में देश भक्ति की भावना एवं एकता को बल प्रदान करने में अमूल्य भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा दिए गए नारों एवं वाक्यों ने भी भारतीयों को एक होने में बल प्रदान किया। बाल गंगाधर द्वारा दिया गया नारा ''स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और इसे मैं लेकर रहूंगा'' ने भारतीयों को स्वराज्य के प्रति प्रेरित किया एवं भारत को एक होकर लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित किया। प्रत्येक व्यक्तियों के लिए स्वराज्य का अर्थ अपना भारत माना जाने लगा और लोग संगठित होकर एक उद्देश्य से स्वतंत्रता की लड़ाई लड़े। भगत सिंह द्वारा दिया गया नारा ''इंकलाब जिंदाबाद'' आज भी लोगों में उत्साह एवं देश भक्ति की भावन का संचार करता है। मोहम्मद इकबाल द्वारा दिया गया नारा ''सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा'' देश की जनता को हिन्दुस्तान के प्रति समर्पित करने के लिए योगदान दिया और हिन्दुस्तान को एकीकृत राष्ट्र के रूप में प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। सुभाष चन्द्र बोस द्वारा दिया नारा ''जय हिन्द'' स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लोगों को एकजुट करने के लिए एक शस्त्र के रूप में साबित हुआ और आज भी ''जय हिन्द'' का नारा सुनते ही देश के निवासी अपने आप को एकीकृत महसूस करने लगते हैं।

समाज सुधारकों एवं स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा स्थापित संस्थाओं जैसे रामकृष्ण मिशन, आर्य समाज, ब्रह्म समाज, होमरूल लीग आदि ने भी लोगों को धार्मिक एवं सामाजिक रूप से एकीकृत किया और संगठित कर एकता की शक्ति प्रदान की।

स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा शुरू की गई स्वदेशी आंदोलन जिसके एक मुख्य नेता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय थे ने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से भारतीयों में भारतीयता का संचार किया एवं उन्हें एकीकृत किया।

बंकैया द्वारा तैयार किया गया तिरंगा झंडा आज भी सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में पिरोने का काम कर रहा है। स्वतंत्रता सेनानियों ने तिरंगा को एक राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में प्रयोग कर भारतीयों को एकीकरण करने का काम किया।

स्वतंत्रता सेनानियों ने धार्मिक उत्सवों के माध्यम से भी भारत का एकीकरण करने का कार्य किया। बाल गंगाधर तिलक ने 1893 में गणपति उत्सव एवं 1895 में शिवाजी उत्सव का शुभारंभ किया एवं धार्मिक उत्सवों के माध्यम में भारतीयों को संगठित एवं एकता के धागे में पिरोने का कार्य किया।

स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा संगठित किए जाने एवं एकता रूपी शस्त्र के आधार पर तथा त्याग एवं प्राणों के बलिदान के आधार पर भारत ने स्वतंत्रता तो प्राप्त कर ली किन्तु माउन्टबेटन योजना के तहत भारत सरकार का विभाजन दो राष्ट्रों में कर दिया गया। भारत के स्वतंत्र होने के उपरान्त सम्पूर्ण भारत करीब 565 रियासतों में बंटा हुआ था। स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य के लिए स्वतंत्रता सेनानियों ने सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में पिरोकर स्वतंत्रता प्राप्त तो कर ली थी परन्तु इन 565 रियासतों के प्रशासकों को भारत परिसंघ में शामिल करना एक टेढ़ी खीर थी। यह एक ज्वलंत समस्या थी जिसके लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जी ने अथक प्रयास किए किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। नेहरू जी की सरकार में सरदार वल्लभ भाई पटेल प्रथम उपप्रधान मंत्री एवं गृहमंत्री के पद पर कार्यरत थे। भारत के राजनीति एकीकरण की समस्या को निपटाने के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल आगे आए और उन्होंने अभूतपूर्व कौशलता का परिचय देते हुए इस ज्वलंत समस्या को बड़ी सादगी एवं शालीनता से निपटा दिया। देशी रियासतों का भारतीय परिसंघ में विलय कर सरदार वल्लभ भाई पटेल ने एक महत्वपूर्ण कार्य किया और आधुनिक भारत के शिल्पकार के रूप में पहचान बनाई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय सम्पूर्ण भारत लगभग 565 रियासतों में बटा हुआ था। श्री वल्लभ भाई पटेल ने वी.पी. मेनन की सहायता से करीब 563 रियासतों के प्रशासकों को भारत में विलय के लिए सहमत कर लिया था या यूं कहें कि सरदार वल्लभ भाई पटेल से प्रभावित होकर उन्होंने भारतीय परिसंघ में शामिल होने के लिए सहमति दे दी। 563 रियासतों के प्रशासकों ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए किन्तु जूनागढ़, हैदराबाद, कश्मीर एवं भोपाल रियासतों के प्रशासकों ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने से इंकार कर दिया। कालांतर में भोपाल भारतीय परिसंघ में शामिल हो गया किन्तु हैदराबाद एवं जूनागढ़ को शामिल करने के लिए सरदार बल्लभ भाई पटेल ने सेना की मदद ली और उन्हें भी भारतीय परिसंघ में विलय कर लिया। कश्मीर ने अपने आपको स्वतंत्र राज्य घोषित किया।

तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने कश्मीर को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बताते हुए उसे संयुक्त राष्ट्र संघ ले जाने की बात कही। भारत की अलगाववादी नीतियों के कारण कश्मीर का विलय 2019 तक भारत में नहीं हुआ किन्तु 5 अगस्त 2019 को वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने महत्वपूर्ण योगदान देते हुए अनुच्छेद 370 एवं 35(अ) को समाप्त कर कश्मीर को भी सम्पूर्ण भारत का अभिन्न अंग घोषित किया। यह सरदार वल्लभ भाई पटेल के अखण्ड राष्ट्र के सपने को पूरा करने में मील का पत्थर साबित हुआ और सरदार वल्लभ भाई पटेल का अखण्ड राष्ट्र एवं राजनीतिक एकीकरण का सपना पूर्ण हुआ।

आज भी हम सरदार वल्लभ भाई पटेल के भारत का राजनीतिक एकीकरण में दिए महत्वपूर्ण योगदान को भूल नहीं पाए हैं और प्रत्येक वर्ष 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाते है। यह उनके प्रति कृतज्ञता को प्रदर्शित करता है और उनके द्वारा एकता के मूल मंत्र जो हमें दिए गए है उन्हें आत्मसात करने के लिए प्रेरित करता है।

रन फॉर यूनिटी के दौरान प्रधानमंत्री जी ने यह कहा था कि आज कश्मीर से कन्याकुमारी, अटक से कटक, हिमाचल से महासागर, उत्तर से दक्षिण एवं पूरब से पश्चिम तक तिरंगा झंडा फहरा रहा है और यह सिर्फ सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा किए गए योगदान के फलस्वरूप ही संभव हुआ है। वर्ष 2016 में प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर तो यहां तक कहा था कि चाणक्य के बाद यदि भारत को एकीकृत राष्ट्र बनाने में किसी ने अपना अमूल्य योगदान दिया है तो वह सरदार वल्लभ भाई पटेल हैं।

आज सम्पूर्ण भारत सरदार वल्लभ भाई पटेल का ऋणी है जो उन्होंने हमें एकीकृत कर एक सम्पूर्ण राष्ट्र में रहने का अवसर प्रदान किया। भारत सरकार ने उनके योगदानों के स्मरण में गुजरात के बड़ोदरा के निकट नर्मदा नदी के तट पर 182 मीटर (597 फीट) ऊँची प्रतिमा का निर्माण हुआ जो सरदार वल्लभ भाई पटेल की है। इस प्रतिमा का नाम स्टैच्यु ऑफ यूनिटी दिया गया। यह विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है।

इस प्रकार स्वतंत्रता सेनानियों ने भारत के एकीकरण में अमूल्य योगदान दिया है। सामाजिक, धार्मिक एकीकरण में स्वतंत्रता में पूर्व के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान रहा साथ-साथ राजनैतिक रूप से संगठित एवं एकत्रित कर उन्हें देश की स्वाधीनता की लड़ाई के लिए प्रेरित किया तत्पश्चात् स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सम्पूर्ण राष्ट्र के एकीकरण में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपना योगदान दिया।

वल्लभ भाई पटेल को सरदार नाम बरदोली की महिलाओं द्वारा प्रदान किया गया था एवं सरदार नाम के अनुरूप उन्होंने पूरे देश का राजनीतिक एकीकरण कर सचमुच एक सरदार अर्थात सेनापति की भूमिका निभाई। उनकी अगुवाई में ही भारत का राजनीतिक एकीकरण संभव हुआ। सरदार वल्लभ भाई को भारत के एकीकरण का पिता कहा जाता है।

शुष्क क्षेत्रों में जलभृत मानचित्रण एवं प्रबंधन के लिए हेलिबोर्न भूभौतिकी सर्वेक्षण

कंवर प्रदयुमन सिंह
वैज्ञानिक बी (भूभौतिज्ञ), केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, पश्चिमी क्षेत्र जयपुर

केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड (CGWB), जल शक्ति मंत्रालय देश में भूजल संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय जलभृत मानचित्रण और प्रबंधन कार्यक्रम (NAQUIM) लागू कर रहा है।

इस कार्यक्रम के तहत भूवैज्ञानिक, भूभौतिकीय जल भूवैज्ञानिक, जल विज्ञान और जल गुणवत्ता अध्ययन सहित एक बहु-विषयक दृष्टिकोण को नियोजित किया जा रहा है, जो किसी दिए गए क्षेत्र के जलभृत मानचित्रों और प्रबंधन योजनाओं को तैयार करने में परिणत होता है। कार्यक्रम के तहत अन्वेषणात्मक ड्रिलिंग, भू-भौतिकीय जाँच और जल गुणवत्ता विश्लेषण जैसी शास्त्रीय भूजल जांच तकनीकों के पूरक के लिए हेलिबोर्न भूभौतिकीय सर्वेक्षण जैसी उन्नत तकनीकों को भी लिया जा रहा है।

केंद्रीय भूमिजल बोर्ड, जल शक्ति मंत्रालय, सीएसआईआर.एन जी आर आई (CSIR-NGRI) के सहयोग से हेलिबोर्न क्षणिक विद्युत चुंबकीय (Heliborne TEM) आयोजित किए जा रहे हैं। प्राचीन चिरप्रतिष्ठित भूजल सर्वेक्षण और अन्वेषण के संयोजन के साथ इस तरह के हेलिबोर्न सर्वेक्षणों में तेजी से स्थानिक कवरेज और उच्च रिजॉलयूशन डेटा उत्पन्न करने का लाभ होता है जो बेहतर पैमाने पर जलभृतों के उप-सतह स्वभाव के बारे में जानकारी प्रदान कर सकता है।

भारत देश के उत्तर पश्चिम भाग में राजस्थान, गुजरात, हरियाणा और पंजाब राज्यों में फैले शुष्क क्षेत्रों में पानी की समस्या के निवारण और भूजल संसाधनों को बढ़ाने के लिए उच्च विभेदन जलभृत (हाई रेसोलुसन एक्विफर) का मानचित्र बनाने और जल प्रबंधन करने हेतु भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय ने इस सर्वेक्षण कार्यक्रम को स्वीकृति दी है। दो चरणों में होने वाले इस सर्वेक्षण के अन्तर्गत, पहले चरण (2021-22) में लगभग एक लाख वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र शामिल किया गया है जिसमें राजस्थान के आठ जिलों में लगभग 65,500 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र, गुजरात के 5 जिलों का 32,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र और हरियाणा के 2 जिलों में 2,500 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र सम्मिलित है।

पहले चरण के तहत कवर किए जाने वाले - 1 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में से, लगभग 20,000 वर्ग किमी. का क्षेत्र प्राथमिकता क्षेत्र है, जिसमें उड़ान कवरेज के और भी अधिक घनत्व की परिकल्पिना की गई है। प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में 20 अतिशोषित ब्लॉक (Over-Exploited) ब्लॉक शामिल हैं जिनमें से 11 अतिशोषित ब्लॉक राजस्थान में हैं (जैसलमेर जिले में 1 ब्लॉक, जोधपुर जिले में 9 ब्लॉक, सीकर जिले में 1 ब्लॉक) और 9 अतिशोषित ब्लॉक हरियाणा में हैं (कुरुक्षेत्र जिले के 5 ब्लॉक और यमुना नगर जिले में 4 ब्लॉक)। पहले चरण के तहत लगभग 41,000 उड़ान लाइन किमी. का सर्वेक्षण किया जाएगा।

इन क्षेत्रों में हैलिकॉप्टर में उच्च भूभौतिकीय तकनीक के संयंत्र को लगा कर सर्वेक्षण और अन्य वैज्ञानिक अध्ययनों के उपयोग के लिए केन्द्रीय भूमिजल बोर्ड, जल शक्ति मंत्रालय और सी एस आई. आर. आई, हैदराबाद के बीच 21 दिसंबर, 2020 को एक करार किया गया। मौजूदा समय में भूजल के तेजी से और बहुत बड़े क्षेत्रों में हाई रेसोलुसन एक्विफल का मानचित्र बनाने के लिए यह सबसे उन्नत भूभौतिकीय तकनीक है। केन्द्रीय भूमिजल बोर्ड, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा देश के इतने बड़े शुष्क/अर्धशुष्क क्षेत्र में जलभूतों की पहचान करने के लिए माननीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी ने इस अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करने का निर्णय लिया। इस हेलीकॉप्टर युक्त भूभौतिकी सर्वेक्षण का उद्घाटन भारतीय हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान ग्राउंड, ठेंगड़ी नगर, चौखा, जोधपुर में 05-10-2021 को माननीय जल शक्ति मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत जी एवं डॉ. जितेन्द्र सिंह जी, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, राज्य मंत्री पीएमओ, कार्मिक लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, अन्तरिक्ष विभाग, भारत सरकार के कर कमलों द्वारा हेलीकॉप्टर को हरी झंडी दिखाकर किया।

यह अध्ययन उच्च विभेदन जलभृत मानचित्र तैयार करने के लिए जानकारी प्रदान करेगा जिसमें डी-सैचुरेटेड और संतृप्त जलभृतों के सीमांकन के साथ जलभृत ज्यामिती, 3 डी भूभौतिकीय मॉडल, ताजा और खारा क्षेत्र, पैलियो-चैनल नेटवर्क का वितरण, भूजल निकासी के लिए उपयुक्त स्थल, कृत्रिम पुनर्भरण आदि के लिए उपयुक्त स्थल

शामिल हैं।

इस सर्वेक्षण योजना के मुख्य उद्देश्य—

- ❖ जलभृत मानचित्रण, कृत्रिम पुनर्भरण के लिए स्थलों, 3 डी भूभौतिकीय प्रतिरूप, भूभौतिकीय विषयगत मानचित्र, असंतृप्त जलभृतों की जानकारी के साथ ताजा और खारा भूजल क्षेत्रों की गुणवत्ता की पहचान।
- ❖ पुरा-वाहिका नेटवर्क का स्थानगत वितरण यदि कोई हो, और जलभृत प्रणाली के साथ उसकी संहलग्नता।
- ❖ भूजल निकासी के लिए उत्तम उपयुक्त स्थल और कृत्रिम या प्रबंधित जलभृत पुनर्भरण के जरिए जल संरक्षण।

इस अध्ययन के निष्कर्षों से पानी की कमी वाले क्षेत्रों में भूजल स्तर में सुधार करने के लिए क्षेत्र विशिष्ट योजनाएँ तैयार करने और भूजल संसाधनों के सतत प्रबंधन के लिए मार्ग प्रशस्त करने में मदद मिलेगी।

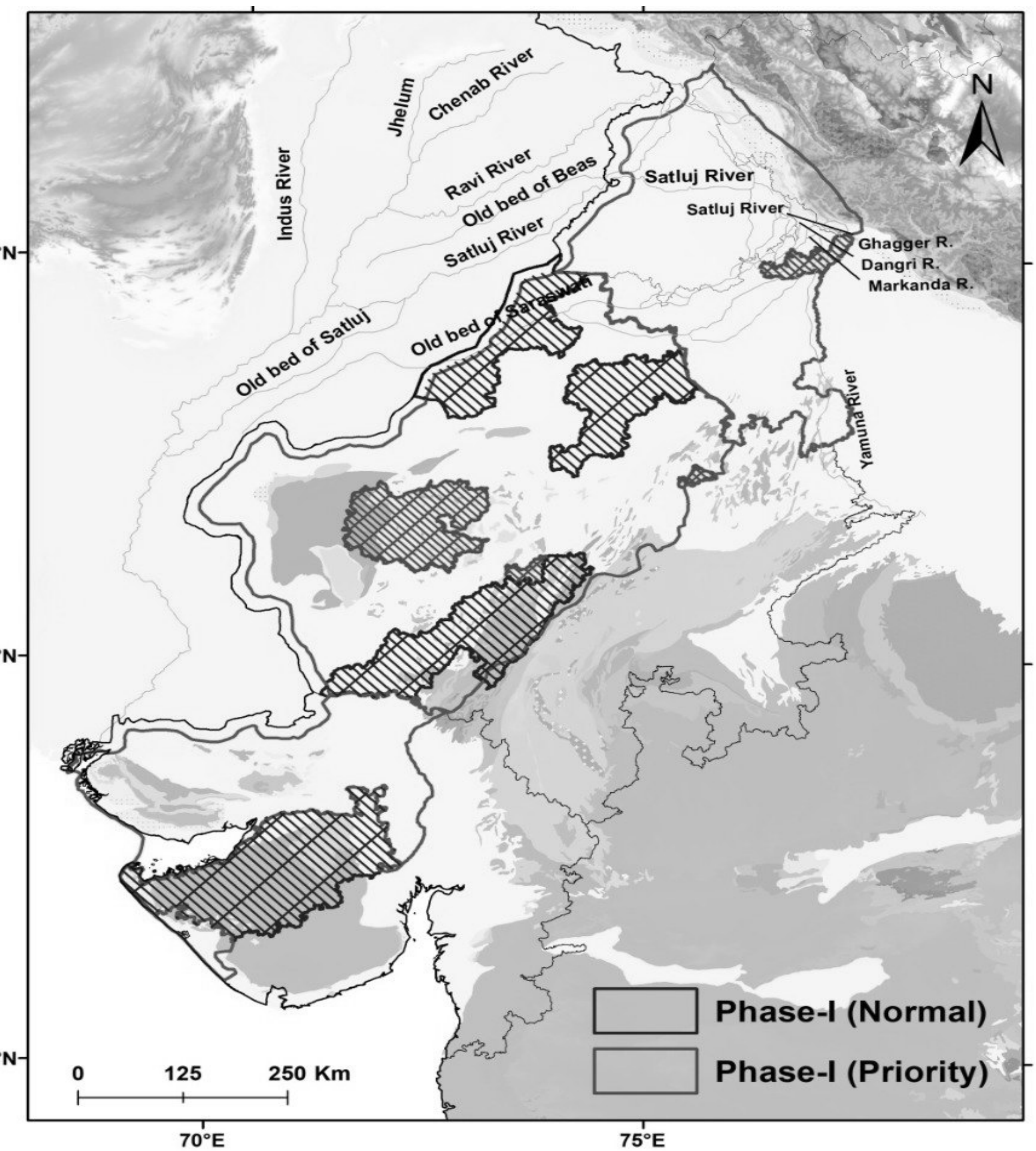

हेलिबोर्न भूभौतिकीय सर्वेक्षण क्षेत्र का मानचित्र

'सबक'

निर्मल कुमार शर्मा

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन), उत्तर पश्चिम रेलवे, बीकानेर

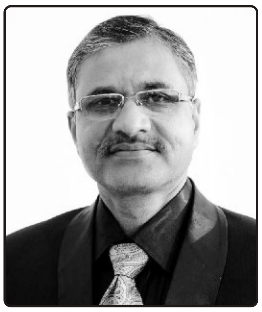

सूर्यकांत के सजग नयन एवं चौकन्ने कान पिछले कई महीनों से जिस क्षण के लिये प्रतीक्षारत थे, वह सुखद क्षण आज आ ही गया। गली के कोने से प्रविष्ट होते डाकिये की साईकिल की घंटी आज उसे अन्य दिवसों की अपेक्षा कुछ अलग संदेश देती हुई प्रतीत हुई और इसीलिये वह घंटी की आवाज के साथ ही तुरंत बैठक का दरवाजा खोल कर मुख्य द्वार के पास आ खड़ा हुआ।

किसी भी युवा की आकांक्षा होती है कि वह स्वावलम्बी बने, उसकी योग्यता का सही आकलन, मूल्यांकन हो एवं तदनुसार उसे यथायोग्य रोजगार प्राप्त हो। संयुक्त परिवारों के विघटन के पश्चात यह और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है कि युवा शीघ्र स्वावलम्बी बनें।

सूर्यकांत अत्यंत भाग्यशाली था कि उपभोक्तावाद के फैलते दावानल से बिलकुल अछूते एक अत्यंत संस्कारवान परिवार में उसका जन्म हुआ था। पिता जितने विद्वान, सुसंस्कृत, परोपकारी व परिश्रमी थे, माता भी उतनी ही विदुषी, मिलनसार व सात्विक थी। माता-पिता के संस्कार सदैव संतान आत्मसात कर लेती है। सूर्यकांत एवं उसके भाई-बहिनों में भी इन संस्कारों, सद्‌गुणों की छवि स्पष्ट ही देखी जा सकती थी। इतने सद्‌गुणों के पश्चात भी परिवार पर माँ लक्ष्मी की कृपा कुछ कम थी। इन परिस्थितियों में जीविकोपार्जन का कोई साधन और वो भी राजकीय सेवा का अवसर मिल जाये तो निस्संदेह इससे अधिक प्रसन्नता की कोई बात हो ही नहीं सकती।

इंजीनियरिंग की अपनी पढ़ाई पूर्ण कर,राजकीय सेवा का अवसर पाने हेतु उसने अपनी ओर से सभी संभव प्रयास प्रारम्भ कर दिए थे। वस्तुत: उच्च प्राथमिक कक्षा में अध्ययन के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री जी के समाचार पत्र में आये इस वक्तव्य ने ''प्रदेश में किसी भी तकनीकी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति को बेरोजगार नहीं रहने दिया जायेगा, यदि ऐसा कोई व्यक्ति बेरोजगार है तो तत्काल मुख्यमंत्री कार्यालय से संपर्क करे, उसे रोजगार उपलब्ध करवाया जायेगा'', उसे तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया था। किन्तु अब परिस्थितियां कुछ भिन्न थीं। उसने तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात राज्य के जन-शक्ति आयोजना विभाग, रोजगार कार्यालय आदि में तुरंत पंजीकरण करवा लिया था एवं विभिन्न विभागों द्वारा भर्ती के लिये आयोजित की गई परीक्षाओं में भी भाग लिया। कम रिक्तियों एवं अधिक आवेदकों की संख्या के कारण गलाकाट प्रतियोगिता होने के उपरांत भी उसे अपनी योग्यता पर विश्वास था एवं वह आश्वस्त था कि कुछ विलम्ब अवश्य हो सकता है किन्तु उसे राजकीय सेवा का अवसर अवश्य मिलेगा।

इसी आत्म-विश्वास एवं गहन परिश्रम की ही परिणिति आज इस सुखद क्षण के रूप में हुई, जब डाकिया उसका नियुक्ति पत्र लेकर द्वार पर खड़ा था। डाक बाँटने के अपने विस्तृत अनुभव के फलस्वरूप डाकिये ने लिफाफे के रंग व उस पर लिखे प्रेषक के विवरण से जान लिया था कि इसमें अवश्य ही नियुक्ति सम्बन्धी सूचना है। सूर्यकांत के चेहरे पर स्पष्ट दृष्टिगोचर प्रसन्नता के भाव ने उसके आकलन पर मुहर लगा दी। डाकिया बोला ''भैया, क्या खुशी इस लिफाफे में है, जरा हमें भी तो बताओ''। उसने तुरंत ही लिफ़ाफ़ा खोल कर उत्सुक नेत्रों से पत्र पढ़ा। प्रसन्नता से उसके हाथ काँपने लगे, पत्र उसका चिर-प्रतीक्षित नियुक्ति पत्र ही था। नियुक्ति पत्र के बारे में जान कर डाकिया तुरंत बोला ''भैया, यह खुशी हमारे हाथों से आप तक पहुँची है तो कुछ तो अवश्य होना चाहिये''।

उसने पत्र पढ़ना जारी रखा, इसमें उसे स्थाई सेवा में आने से पूर्व आवश्यक प्रशिक्षण हेतु जाने के निर्देश थे। उसकी शिक्षा सम्बन्धी मूल दस्तावेज़ों का सत्यापन,चिकित्सकीय दृष्टि से उपयुक्तता एवं प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक प्राप्त करना,नियुक्ति की पूर्व शर्तों में सम्मिलित थे। डाकिये ने पुन: पुकारा ''भैया,आप तो मेरे आग्रह को भूल ही गये हो''। उसने चहकते हुए कहा ''नहीं-नहीं डाकिया जी ! मैं अभी आया''। वह तुरंत घर में गया और माँ के हाथ के बनाये बेसन के दो लड्‌डू एक तश्तरी में रख,साथ में शीतल जल की गिलास ले कर लौटा और डाकिये की ओर बढ़ाते हुए बोला 'लीजिये, मुँह मीठा कीजिये'। डाकिये ने लड्‌डू खाने के बजाय अपने थैले में सरका दिये और बोला 'ये मुंह मीठा करने के अवसर तो वर्ष में अनेकों बार आते हैं किन्तु आज तो अत्यंत विशेष अवसर है। आज सिर्फ मुंह मीठा करने से काम नहीं चलेगा,आज तो कुछ और भी होना चाहिये'।

वह डाकिये का आशय समझ नहीं पाया और उनसे बात स्पष्ट करने को कहा। डाकिये ने कुटिल मुस्कान छेड़ते हुए कहा ''तुम्हें नियुक्ति पत्र मेरे माध्यम से प्राप्त हुआ है अत: मैं भेंटस्वरूप कुछ धनराशि प्राप्त करने

का पात्र हूँ''। उसने आश्चर्य से कहा ''किन्तु यह तो आपकी राजकीय सेवा का कर्तव्य है कि आप अपने क्षेत्र में सभी को समय पर एवं सुरक्षित रूप से डाक बाँटें, इसमें भेंट का प्रश्न कहाँ से उत्पन्न हो गया''। डाकिया अपनी हठधर्मिता पर बना रहा और बोला ''बरख़ुरदार, राजकीय सेवा में आ जाओगे तो स्वत: ही सब कुछ सीख जाओगे, जाओ भेंट की राशि ले आओ, मुझे अभी बहुत डाक बाँटनी शेष है। और हाँ राजकीय सेवा में जाने से पूर्व के प्रशिक्षण का पहला सबक़ मुझसे ले लो कि आपकी राजकीय सेवाओं के कर्त्तव्य निर्वहन के फलस्वरूप यदि किसी व्यक्ति/संस्था को कोई देय लाभ भी मिलता है, तब आप भेंट पाने के पात्र हैं''।

सूर्यकांत अपने ऊपर नियंत्रण रखते हुए बोला ''नहीं-नहीं ! यह तो सर्वथा अनुचित है, अनैतिक है। डाकिया मुस्कराते हुए बोला ''भैया, यही उचित, न्यायसंगत व नैतिक है। यद्यपि मैं बहुत अधिक शिक्षित नहीं हूँ तथापि इतना अवश्य जानता हूँ कि समाज जिसे सार्वजानिक रूप से स्वीकार कर ले, जिसकी भर्त्सना न करे, वे सभी कृत्य नैतिकता की परिभाषा में आते हैं और मैं भी उस नैतिकता की परिधि में ही भेंट की मांग कर रहा हूँ''।

उनके इस वार्तालाप के मध्य उसकी माँ भी बाहर आ गई थी। डाकिये ने पुन: अपनी माँग उसकी माँ के समक्ष दोहराई। काफ़ी जिद्दो-जहद के बाद डाकिया माँ द्वारा दी गई अल्प राशि को ले कर चला गया किन्तु उसके मस्तिष्क में अनेक प्रश्न छोड़ गया। एक कर्त्तव्यनिष्ठ शिक्षक पिता एवं धर्म-परायण गृहिणी माता के साधारण किन्तु सुसंस्कृत एवं विद्वान परिवार में जो संस्कार उसने ग्रहण किये थे, यह सम्पूर्ण घटनाक्रम उसके सर्वथा विपरीत था। उसकी मनोदशा को भाँप, उसे संयत करने की दृष्टि से माँ बोली 'बेटा, किसी भी शुभ सूचना के समय, डाकिये बधाई राशि लिए बिना मानते ही नहीं हैं,तुम उसके व्यवहार से विचलित न हो'।

अस्तु ! परिवार में आज प्रसन्नता का माहौल था। सभी परिजनों ने ईश्वर को इस कृपा के लिये धन्यवाद दिया एवं उसने प्रशिक्षण पूर्व की औपचारिकताओं की तैयारी प्रारम्भ कर दी। उसे प्रशिक्षण से पूर्व विभाग के मुख्यालय में सभी आवश्यक दस्तावेज़ों का सत्यापन करवा कर राजकीय चिकित्सालय में चिकित्सा परीक्षण करवाना था। इसके पश्चात प्रशिक्षण हेतु प्राधिकार लेकर प्रशिक्षण संस्थान जाना था।

अगले ही दिन उसने मुख्यालय जाने हेतु रेल यात्रा के लिए आरक्षित टिकट खरीदा किन्तु यात्रा में अत्यंत कम समय रह जाने के कारण उसे प्रतीक्षा सूची का टिकट ही मिल पाया। मुख्यालय में निर्धारित तिथि को उपस्थित होने की बाध्यता के कारण उसे नियत समय पर प्रस्थान करना आवश्यक था। वह समय से पूर्व रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया एवं आरक्षित डिब्बे के प्रभारी टी.टी. ई. को अपनी विवशता बता कर डिब्बे में प्रविष्ट होने की अनुमति माँगी। टी.टी. ई. ने उससे कहा कि यदि कोई आरक्षित यात्री किसी कारणवश यात्रा हेतु नहीं आता है, तभी उसे शायिका आवंटित हो सकेगी अन्यथा उसे अनारक्षित डिब्बे में जाना होगा। उसने इस हेतु स्वीकारोक्ति दी एवं टी.टी. ई. के बताये स्थान पर बैठ कर उनके अगले आदेश की प्रतीक्षा करने लगा।

गाड़ी चलने के कुछ समय पश्चात टी.टी. ई. ने उसे बताया कि उसके भाग्यवश दो अनारक्षित यात्री, यात्रा हेतु उपस्थित नहीं हुए अत: उसे एक शायिका आवंटित कर दी गयी थी। उसने अत्यंत विनम्रता के साथ टी.टी. ई. का धन्यवाद ज्ञापित किया किन्तु टी.टी. ई. बड़े ही सपाट शब्दों में बोला कि उसमें धन्यवाद की कोई बात नहीं थी, लेकिन हाँ, उसकी महती आवश्यकता की उस घड़ी में जो सुविधा उसे प्रदान की गई थी, उसके निमित्त सुविधा शुल्क उसे वहन करना होगा। छल-प्रपंच से कोसों दूर निश्छल-मन वह पुन: टी.टी. ई. का आशय न समझ सका। उसने टी.टी. ई. से कहा 'किन्तु आप ही ने तो बताया था कि किसी आरक्षित यात्री के उपस्थित न होने के कारण ही मुझे शायिका मिल पाई है, इसमें अतिरिक्त शुल्क देने का प्रश्न कहाँ उठता है।' अब टी.टी. ई. के स्वर में कर्कशता आ गई थी, वह बोला ''तुम सहायता पाने के पात्र ही नहीं हो, तुम्हारी विवशता देख कर मैंने तुम्हे प्राथमिकता पर शायिका का आवंटन किया और अब तुम ही मुझे कानून का पाठ पढ़ा रहे हो।'' उसने तनिक प्रतिरोध करते हुए कहा कि ''आरक्षित यात्री के न आने पर प्रतीक्षारत यात्री को शायिका आवंटित करना क्या आपकी राजकीय सेवा का कर्त्तव्य नहीं है ?'' यह सुनते ही टी.टी. ई. आपे से बाहर हो गया एवं उबलते हुए बोला ''अभी तुम्हे दुनियादारी का तनिक भी भान नहीं है, राजकीय सेवा में रंग जाओगे तो स्वत: ही सब कुछ समझ जाओगे। और हाँ,राजकीय सेवा में जा रहे हो तो मेरा एक सबक याद रखना कि राजकीय सेवा के कर्त्तव्य निर्वहन के फलस्वरूप किये गए किसी भी कार्य से किसी व्यक्ति अथवा संस्था विशेष को देय लाभ मिलने पर भी आप सेवा शुल्क पाने के पात्र हैं। इस अधिकार को कभी न खोना,यही कलियुग में सफलता की कुंजी है'' सहयात्रियों ने भी टी.टी.ई. की हाँ में हाँ मिलायी और उससे कुछ राशि लगभग जबरन वसूलते हुए टी.टी.ई. यह कहते हुए गया कि ''यदि ऐसा व्यवहार करोगे तो भविष्य में किसी से सहायता की अपेक्षा भी मत रखना।''

वह किंकर्त्तव्यमूढ़ था, उसे शाला में गुरूजी द्वारा बताई गई नैतिकता की परिभाषा का स्मरण हो आया कि ''नैतिकता वह आचरण है जिसे समाज स्वीकार करता है।'' उसे लगा कि समाज के प्रतिरोध न करने के कारण ही कुछ अनैतिक कृत्य भी अब नैतिकता की सीमा में अतिक्रमण करने लगे हैं। उसने अपने आपको संयत करने का प्रयास किया एवं अपनी शायिका पर चद्दर बिछा कर सो गया।

अगले दिन गंतव्य पर पहुँच कर मुख्यालय के खुलने से पूर्व ही वह

कार्यालय में उपस्थित हो गया। राजकीय कार्यालयों में विद्यमान लेट-लतीफ़ी का आनंद लेते हुए अधिकारी व कर्मचारी अपनी-अपनी सुविधानुसार कार्यालय में पहुँच रहे थे। उसने सम्बंधित अधिकारी के समक्ष अपना नियुक्ति सम्बन्धी बुलावा पत्र प्रस्तुत किया एवं उनके निर्देशानुसार कार्यालय अधीक्षक के पास गया।

कार्यालय अधीक्षक अपनी दोनों बाँहें ऊपर की ओर फैला कर अपनी सुस्ती उड़ाने का प्रयास कर रहे थे। उसका बुलावा पत्र देख कर उनकी आँखों में चमक आ गयी, बोले 'बैठिये, अभियंता पद पर चयनित होने के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई,कहाँ से आये हैं,पहले से कहीं कार्य कर रहे हैं या प्रथम नियुक्ति है ?'' इन एक साथ पूछे कई प्रश्नों के उत्तर उसने अत्यंत धैर्य व विनम्रता के साथ दिये एवं पूछा कि चिकित्सकीय जांच हेतु पत्र कितनी देर में जारी कर दिया जाएगा। कार्यालय अधीक्षक बनावटी हँसी हँसते हुए बोले ''वह तो जारी हो ही जायेगा, पहले नियुक्ति की खुशी को मुंह मीठा कर बाँटिये तो सही।''

फिर उसकी मनोदशा को भाँप कर कार्यालय अधीक्षक बोले ''जाइये,छोटे बाबू आपको सब समझा देंगे। संकेत पाते ही छोटे बाबू ने उसे अपने पास बुलाया और बोले श्रीमान, ये जो सरकारी फ़ाइलें होती हैं ना, बहुत आलसी होती हैं, ये चींटियों से भी सुस्त गति से चलती हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि इन्हें अपनी चाल चलने दें या इनके पँख लगा कर इन्हें परवाज़ दें। आप तो जानते ही हैं कि बड़े शहरों में तीन-चार दिन रुकना कितना व्ययकारी होता है। हैरान- परेशान वह कुछ कहता उससे पूर्व ही छोटे बाबू बोले आपने परसाई जी की ''भोलाराम का जीव'' पढ़ी ही होगी,दरअसल सरकारी फ़ाइल वज़न रखने से ही आगे बढ़ती है।

उससे सुविधा शुल्क को ख़ुशी के प्रसाद के रूप में वसूल कर छोटे बाबू ने उसे कुछ क्षण प्रतीक्षा करने के लिए अपने पास ही बिठा लिया। लगभग दस मिनट बाद ही कार्यालय अधीक्षक ने उसे चिकित्सा जांच हेतु पत्र देते हुए कहा ''बधाई हो ! आपका कार्य बहुत ही कम समय में हो गया। अब शीघ्र स्वास्थ्य सम्बन्धी उपयुक्तता जांच करवा कर प्रमाण पत्र लाएं ताकि आपको प्रशिक्षण हेतु पत्र जारी किया जा सके।''

उसने पूछा ''क्या जाँच किसी भी चिकित्सक से करवाई जा सकती है।'' अधीक्षक हँसते हुए बोले ''नहीं भाई, जाँच विभागीय चिकित्सक से ही करवानी होगी। और सुनो, वहाँ व्यर्थ में अड़ना मत, उनके प्रमाण पत्र से ही आपकी नियुक्ति सुनिश्चित होगी इसलिये उनके आदेश की बिना बहस के पालना कर देना।'' उसका आशय समझ वह झल्लाते हुए बोला ''यह अजीब स्थिति है, जिस बात के लिए सरकार वेतन दे रही है, उसके लिए भी खुले आम वसूली की जा रही है।'' अधीक्षक झल्लाया नहीं बल्कि कुटिल मुस्कान के साथ बोला ''हमारा काम आपको समझाना है, निर्णय आपको स्वयं लेना है किन्तु एक बात अवश्य ध्यान रखना कि आपके माध्यम से किसी को कोई देय लाभ भी मिलता है तो कार्यालय अधीक्षक अपनी बात पूर्ण करते उससे पूर्व ही वह वहाँ से निकल गया।

विभागीय चिकित्सालय की स्थिति तो और भी विचित्र थी। डॉक्टर का कक्ष किसी प्रशासकीय अधिकारी का कक्ष प्रतीत होता था, जिसमें कुर्सी अक्सर खाली मिलती है क्योंकि साहब किसी महत्वपूर्ण बैठक में व्यस्त होते हैं। खाली कक्ष से बाहर निकलते ही अस्पताल के कर्मचारी की पारखी निगाहें उस पर पड़ गयी, उसने पूछा ''चिकित्सा परीक्षा के लिए आये हैं ?'' उसके हाँ करने पर और यह पूछने पर कि वह कौन है, अस्पताल का कर्मचारी बोला कि ''मेरा परिचय यही जानिये कि मैं डॉक्टर साहब का सबसे विश्वासपात्र हूँ, आप तो ये बताइये कि प्रमाण पत्र आज ही चाहिये क्या ?'' उसके हाँ कहने पर वह बोला '' इसके लिए शुल्क ज्यादा लगेगा।''

कितना ज्यादा लगेगा, उसके पूछने पर कर्मचारी बोला ''यह इस पर भी निर्भर करता है कि आपको किस पद पर नियुक्ति मिलने जा रही है, जितना ऊंचा पद, उतनी ऊंची दर होती है यहाँ तो।'' उसकी विवशता भरी सहमति ले कर कर्मचारी उसे कम्पाउण्डर के पास ले गया जिसने आवश्यक नमूने लिए एवं उसका एक्स रे व ई सी जी करवा दिया एवं उसे दो घंटे बाद आने के लिए बोला, बताया की नेत्रों की जाँच डॉक्टर स्वयं करते हैं और उसके बाद ही प्रमाण पत्र जारी किया जाता है। चूंकि फ़ाइल पर वज़न रखा जा चुका था, उसे चिकित्सा सम्बन्धी उपयुक्तता प्रमाण पत्र उसी दिन प्राप्त हो गया किन्तु तब तक शाम के चार बज चुके थे अत: मुख्यालय के कक्ष सूने हो गए थे। मज़बूत कर्मचारी संगठन के चलते अधिकारियों में इतना साहस नहीं था कि कर्मचारियों को देरी से आने व जल्दी जाने से रोक सके और वैसे भी तो वे नहीं चाहते थे कि शाम को उनके कक्षों में परदों के पीछे हो रहे कार्य कोई और देखे।

अगली सुबह वह अधीक्षक से मिला और प्रशिक्षण हेतु पत्र लिया। वह प्रसन्न था कि इतने सोपानों से गुजरते हुए आखिर वह गंतव्य की ओर बढ़ रहा था। प्रशिक्षण संस्थान का भवन अत्यंत भव्य था, प्रशिक्षण के अत्याधुनिक संसाधन वहाँ उपलब्ध थे। उसने साथी प्रशिक्षुओं के साथ अत्यंत लगन व निष्ठा से प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं प्रशिक्षण उपरांत परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आज वह बहुत प्रसन्न था क्योंकि प्रशिक्षण के पश्चात कार्य स्थल पर नियुक्ति हेतु जाने वाला था।

विदाई से पूर्व मुख्य प्रशिक्षक ने उसे प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए बधाई देते हुए कहा ''सुनो, एक बात तुम्हे कहना चाहता हूँ, राजकीय सेवा का एक सबक अवश्य याद रखना कि राजकीय सेवा के कर्त्तव्य निर्वहन के फलस्वरूप किये गए किसी भी कार्य से किसी व्यक्ति अथवा संस्था विशेष को देय लाभ मिलने पर-----''

उसे लगा धरती बहुत तेजी से घूम रही थी, प्रशिक्षण संस्थान में जगह–जगह लिखे सत्य–निष्ठा एवं ईमानदारी के नारे बिखर कर धूल धूसरित हो रहे थे, प्रशिक्षण पूर्व उसे दिलाई गयी कर्त्तव्यनिष्ठा की शपथ वापस कागज़ के पन्नों में लौटाई जा रही थी।

उसने स्वयं को संयत किया एवं शांत मन से हॉस्टल पहुँच कर अपना सामान बाँधने लगा। उसने तय किया कि सबक तो वह बहुत ले चुका, अब उसे नयी परम्परा प्रारम्भ करनी है। वह नए संकल्प के साथ नियुक्ति स्थल के लिए निकल पड़ा।

हिंदी हमारे देश की धड़कन है, जिसे देश के हित में गतिशील बनाये रखना हम सबकी राष्ट्रीय जिम्मेवारी है।

–रामधारी सिंह दिनकर

अस्तेय

(साभार-जीवन वेद से)

'परदृव्यापहरणंत्यागोऽस्तेयम्'

दूसरे की चीज दखल न करने का नाम ही अस्तेय है अर्थात अस्तेय शब्द का अर्थ ही है अचौर्य, चोरी न करना। यह चोरी करना चार प्रकार का होता है:-

1. स्थूलभाव से किसी की चीज चोरी करना। साधारण भाव से इसी स्थूल चौर्य को लौकिक भाषा में चोरी कहा जाता है। रुपया पैसा या चीज चुरा कर भाग जाना या हथियार लेकर डकैती करके लूट ले जाना ही चोरी है। शरीर के बल से, हथियार के बल से या बुद्धि के बल से दूसरे का चाहे रुपया, पैसा, जमीन जायदाद या और कुछ भी दखल करो वह सब चोरी ही है। कारण उससे दूसरे की चीज ठग कर दखल करने की वृत्ति तो होती ही है। न्याय संगत रीति से किसी से चीज के बदले चीज बदल करना जैसे रुपये के साथ जमीन, रुपये के साथ चावल, दाल, सोना, चाँदी आदि बदलना चोरी के अन्दर नहीं गिना जाता।

2. चोरी का दूसरा भेद यह है कि तुमने स्थूल भाव से तो किसी की कोई चीज नहीं ली किसी की जमीन जायदाद आदि नहीं हथिया ली, किन्तु मन ही मन वैसा करने का विचार किया। तब वह भी चोरी ही समझी जायेगी; क्योंकि पुलिस के डर से या बदनामी के डर से तुम ने यहाँ स्थूल भाव से चोरी तो नहीं की; परन्तु तुम्हारे भीतर के मनुष्य ने तो चोरी की है।

3. सम्भव है तुम किसी की चीज नहीं चुराते किन्तु यदि दूसरे को जो उचित रीति से मिलना चाहिए, जो उसका उचित पावना है उससे उसको वंचित करते हो तो उसकी हानि के कारण तुम हुए। यह भी चोरी है।

4. यदि किसी को न्यायोचित पावना से तुम वंचित करते हो तो यह भी चोरी है।

तीसरी और चौथी तरह की चोरी के बारे में समझाता हूँ। तुम लोगों ने देखा होगा कि बहुत से पढ़े लिखे लोग भी बिना टिकट लिए रेलयात्रा करते हैं। इसने रेलवे के अधिकारियों से सीधा-सीधा तो नहीं चुराया, किन्तु रेलवे के अधिकारियों का जो उचित पावना है, उससे वंचित करते हैं। जरा विचार कर देखने से मालूम होगा कि रेलवे के अधिकारियों का यात्रियों से सम्बन्ध लेन-देन की तरह का ही है और इसीलिए बिना टिकट की यात्रा करना तीसरी और चौथी तरह की चोरी है। जो गाड़ी पर चढ़ते हैं वे रेलवे अधिकारियों से सेवा लेते हैं। टिकट का दाम चुका कर उन्होंने उसे सेवा का मूल्य पाई-पाई चुका दिया और इसके फलस्वरूप रेलवे अधिकारी कभी नहीं कहते कि हमने अमुक व्यक्ति की सेवा की है, क्योंकि सेवा के बदले रुपये लेने के साथ ही सेवा का महत्व समाप्त हो जाता है। रेलवे के अधिकारियों ने जब मुफ्त सेवा के लिए लाईन नहीं बिछाई, तब उन्हें टिकट के पैसे न देना चोरी है, विचार कर देखो-बीस, पच्चीस रुपयों के लिए जो लोग इस तरह की चोरी करते हैं वे भी क्या भद्र कहे जा सकते हैं? इसी तरह के लोग खूब लम्बी चौड़ी बातें किया करते हैं तथा बात-बात में नेताओं की आलोचना करते हैं- कौन कितना बड़ा चोर है, कौन कितना बड़ा घूसखोर है, कौन कितना बड़ा सज्जन पुरुष है आदि। उनको यदि उनका दोष दिखा दिया जाये तो वे कहेंगे अरे भाई, इतना नीतिवादी होने से दुनिया में चलना ही मुश्किल हो जायेगा। जो अधिकारी हम लोगों के साथ इस तरह का व्यवहार करते हैं, उनके साथ ऐसा व्यवहार करना ही ठीक है। अर्थात चोरी करना ही ठीक है। धर्म प्रचार या सन्यासी मुक्ति का संदेश लेकर तथा राजनीतिज्ञ नेतागण देश का उद्धार करने का सत् उद्देश्य लेकर बिना टिकट यात्रा करते हैं। ऐसे दृश्य को तुम लोग हर रोज देखते हो। आयकर या और बहुत तरह के कर देने में फाँकी के लिए सरकारी कर्मचारियों को घूस देना या निम्न श्रेणी में यात्रा कर अधिकारियों से ऊँची श्रेणी का राह खर्च अदा कर लेना, यह सब अधिकारियों को ठगना छोड़ और कुछ नहीं है। इसलिए यह चोरी तो है, छिछोरापन भी है। सब चौर्यवृत्तियाँ अस्तेयनीति की विरोधिनी है। बुद्धिमान समझदार लोग भी प्राय: जान-बूझकर अस्तेयविरोधी काम कर डालते हैं, अथवा छोटी-छोटी चोरी को अस्तेयविरोधी समझना ही नहीं चाहते। लेखक के एक परिचित परिवहन कर्मचारी ने लेखक को अपने तेरह वर्ष के भाँजे के लिए पूरा टिकट व्यवहार करते हुए देख कर कहा था आप तो इसके लिए आधे टिकट से ही काम चला सकते थे।

कुछ ऐसे भी नीतिवादी हैं जो किसी खास व्यक्ति को तो कभी नहीं ठगते, परन्तु बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों अथवा सरकार को ठगना अपराध नहीं समझते। बहुत से दूकानदार ऐसे भी हैं जो ग्राहकों को तो मिलावट वाला घी बेचते है; पर अपने घर पर मेहमानों को खाँटी घी की पूड़ी खिलाते हैं। यह याद रखना चाहिए कि इस प्रकार का मनोभाव लेकर जो कुछ भी किया जाए सब अस्तेयविरोधी होगा। यह नियम के दूसरे अंगों के समान स्तेय में प्रतिष्ठित होने का सबसे महज उपाय है स्वगत अभिभावन। यदि मनुष्य बचपन से ही इन नीतियों को मन ही मन याद करता रहे, अर्थात मन को समझाता रहे, तो देखा जायेगा कि बड़ा होने पर प्रलोभनों के बीच रह कर भी वह अपने विचार और चरित्र का उन्नत स्तर ठीक रख सकेगा।

जीवन में विनम्रता से सफल लक्ष्य की प्राप्ति

मो. रियाज़ अनवर
वरि. डी.ई.ई./परिवार कल्याण, चिकित्सा विभाग, मंडल रेल अस्पताल, जोधपुर

आज वर्तमान समय में सभी जगह आगे बढ़ने की होड़ सी मची हुई है। हमें जीवन में आगे बढ़ने के लिए विनम्रता, संयमता, प्रेम, सहयोग, निरंतर प्रयासरत एवं अपने गलती एवं भूल से सीखना चाहिए। मानसिक विकसित लोगों की, प्रत्येक स्थानों पर प्रशंसा होती रहती है। हठधर्मी व्यक्ति को इस संसार में वह सम्मान नहीं मिला हैं जो निराभिमानी लोगों ने प्राप्त किया है। जो व्यक्ति भूल करने पर भी उससे सीखते नहीं, उनका जीवन असफल रह जाता है। हमें अपने जीवन में असफलताओं से भी सीखते रहना चाहिए। हम अपने जीवन में सभी सम्मान, पद, वैभव प्राप्त करके भी अपनी विनम्रता को कभी न छोड़े। फल लगने पर डाली भी झुक जाती हैं। इसी प्रकार से, शिक्षा प्राप्त करने पर मानव में विनय की प्राप्ति होती है, परन्तु जिसने शिक्षा प्राप्त कर के भी अपने अन्दर एक अहंकार का जन्म कर डाला, उसका विनाश सुनिश्चित हैं। अहंकार के कारण से ही, सर्वगुण सम्पन्न रावण का भी पतन सुनिश्चित हुआ।

मन में सभी के प्रति अच्छा भाव रखे। संयमपूर्ण चरित्र जीवन-यापन किया जाए। अपनी मधुर वाणी, श्रम व प्रभाव से भी जरुतमंद लोगों की भलाई करनी चाहिये। अगर किसी को आप ऊँचा नहीं उठा सकते, तो नीचे भी मत गिराए। किसी का आप भला न कर सके तो बुरा भी न करें। किसी का सम्मान न कर सके तो अपमान भी न करें। आप किसी भी धर्म के मानने वाले हो, सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिये। सभी धर्मों के नैतिक ज्ञान से अपने जीवन को संवारना चाहिए। स्वयं की सुख-शांति के लिए नम्र हो कर बातें करें। ज्यादा सुने और कम से कम और संयमित भाषा का प्रयोग करते हुए बोले। कम और समय पर बोलना सज्जनों की पहचान होती हैं। सुख-दुःख पर नियंत्रण आध्यात्मिक उन्नति से संभव हैं। मनुष्य बनाने की कला विज्ञान में नहीं, धर्म में हैं। संस्कृति हमें प्रत्येक प्राणी से प्रेम करना सीखाती है। हमारा जन्म लड़ने झगड़ने के लिए नहीं बल्कि प्रेम, शांति, सद्भाव से जीने के लिए हुआ है। हम शांति प्रिय रहे और दूसरों को भी शांति से रहने दें। राजनीतिक विचार सब के अलग हो सकते है। इनसे मतभेद भी हो सकता है परन्तु मनभेद नहीं रखना चाहिए। हम सारे संसार को धोखा तो दे सकते हैं, किन्तु अपनी आत्मा को धोखा नहीं दे सकते। जब तक अहंकार की भावना है, त्याग की भावना का उदय होना असंभव हैं।

हम किसी कार्य को ईमानदारी और अपने सहयोगियों से विचार करते हुए करें। किसी को भी छोटा न समझे। यदि आप सही मार्ग पर चलते रहे तो कोई भी ताकत उसे सफल होने से नहीं रोक पायेगी। यह जरूर हो सकता है कि कोई आपको किसी अनैतिक कारणों से कुछ समय हेतु आपकी सफलता को बाधित कर सकता हैं, परन्तु आपकी सफलता को रोक नहीं सकता। यदि आप अपने जीवन में किसी की चुगली करते हैं तो यह न समझे की जिससे आप कह रहे हैं, वह आपकी चुगली दूसरों से नहीं करेगा। किसी प्रकार के कटु-विचार को मन में प्रवेश नहीं करने दें। जीवन के किसी भी क्षेत्र में, प्रशंसा मिले या निराशा हाथ लगें, हमें अपना श्रेष्ठ देते रहना चाहिए। पृथ्वी पर जब तक जीवन हैं, तब तक अपना श्रेष्ठ देते रहें। इसमें हमारे शरीर का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से मन मस्तिष्क स्वस्थ रहेगा। जीवन को सही ढंग से जीने की कला को समझने वाला, सुख-शांति से जीवन यापन करता हैं। जीवन साधना ही, मनुष्य को लघु से महान और मानव से महामानव बनाती हैं। सभी व्यक्ति में महान बनने की असीम संभावना होती हैं, परन्तु कुछ गलत मार्ग पर चल कर दिशाहीन हो जाते है। आपको जब भी अपनी गलती समझ आ जाए तो आप अपने को परिवर्तित करने की कोशिश करें। सबके साथ सरल और निष्कपट व्यवहार करें। अच्छे व्यक्तियों के समूह में रहेंगे तो आप दिशाहीन होने में अवश्य बचेंगे।

सभ्य व्यक्ति दूसरों पर दोष नहीं लगाते, असफलताओं से नहीं घबराते बल्कि वे अपने में और अधिक साहस बटोर कर आगे बढ़ते हैं। समय तीव्र गति से आगे बढ़ता रहता है। प्रत्येक क्षण अवसर का लाभ लीजिए, प्रगति का मार्ग लम्बा होता हैं। पूर्ण मनोबल, आत्मबल से कार्य में लग जाए तो लक्ष्य तक, हम अवश्य पहुंचेंगे। किसी के दोषों को सुधारने से पहले अपने को सुधारें। जिंदगी छोटी हैं, इसे आलस्य और प्रमोद में बर्बाद नहीं करें। समय का सदुपयोग करें। आप अपनी रचनात्मक शक्तियों की खोज करें। जिस दिन आप अपने हाथ और पैरों पर भरोसा कर लोगे, समझो उस दिन आप सबसे समर्थ व्यक्ति बन जाओगे और बाधाओं को चीरतें हुए लक्ष्य को पाने का बल अपने में अनुभव करोगे। आज से ही हम प्रण लेते हुए आगे बढ़े और लक्ष्य की प्राप्ति करें।

श्री विजय शर्मा, महाप्रबन्धंक उ.प.रे. एवं अध्यक्ष नराकास का स्वागत करते हुए मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री बृजेश कुमार गुप्ता।

श्री गौतम अरोरा, अपर महाप्रबंधक का स्वागत करते हुए मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री बृजेश कुमार गुप्ता।

श्री बृजेश कुमार गुप्ता, मुख्य राजभाष अधिकारी एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) का स्वागत करते हुए श्री परमेश्वर सेन, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी।

श्री अखिलेश कुमार मीना, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (योजना) को रेलवे बोर्ड के रेल मंत्री राजभाषा रजत पदक से सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक श्री विजय शर्मा।

श्रीमती राजकुमारी गुप्ता, कार्यालय अधीक्षक इंजी. को महाप्रबंधक व्यक्तिगत नकद पुरस्कार से सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक श्री विजय शर्मा।

श्री कुलदीप व्यास, कार्यालय अधीक्षक, जोधपुर को महाप्रबंधक व्यक्तिगत नकद पुरस्कार से सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक श्री विजय शर्मा।

श्री बसंत सिंह, उप मुख्य कार्मिक अधिकारी (निर्माण) को महाप्रबंधक व्यक्तिगत नकद पुरस्कार से सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक श्री विजय शर्मा।

श्री संदीप एम. लेले, वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी, लेखा को महाप्रबंधक व्यक्तिगत नकद पुरस्कार से सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक श्री विजय शर्मा।

श्री दीपक कुमार, कार्यालय अधीक्षक को हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक।

क्षेराकास की बैठक एवं राजभाषा सप्ताह-2021 के पुरस्कार वितरण समारोह का दृश्य।

महाप्रबंधक श्री विजय शर्मा संरक्षा मापदंडों की समीक्षा हेतु अजमेर वर्कशॉप समूह का निरीक्षण करते हुए।

ई-पत्रिका मरुधरा के 21वें
अंक को जारी करते हुए
महाप्रबंधक श्री विजय शर्मा।

दिनांक 13.12.2021
को क्षे.रा.का.स.
बैठक का दृश्य।

श्री सुरेश चंद शर्मा, कार्यालय अधीक्षक को क्षेत्रीय
रेल हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता के प्रथम
पुरस्कार से सम्मानित करते हुए महाप्रबंधक।

राजभाषा में प्रशंसनीय योगदान के लिए श्रीमती
निर्मला पारीक उप मुख्य इंजी. (सा.) को स्मृति चिन्ह
प्रदान करते हुए महाप्रबन्धक श्री विजय शर्मा।

राजभाषा में प्रशंसनीय योगदान के लिए श्रीमती निष्ठा
पुरी, उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी को
स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए महाप्रबन्धक श्री विजय शर्मा।

राजभाषा पत्रिका ई-मरुधरा के प्रकाशन में सराहनीय
कार्य के लिए श्री गुरुदयाल सिंह, राजभाषा अधिकारी
को पुरस्कृत करते हुए महाप्रबंधक श्री विजय शर्मा।

महानिदेशालय के.लो.नि.वि., नई दिल्ली द्वारा मुख्य अभियंता के.लो.नि.वि., जयपुर को राजभाषा हिन्दी शील्ड/कप प्राप्ति का दृश्य।

कार्यालय मुख्य अभियंता, के.लो.नि.वि., जयपुर में हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन मास, 2021 के दौरान भाषण व प्रतियोगिताओं तथा सतर्कता जागरुकता सप्ताह के दौरान भ्रष्टाचार के विरुद्ध शपथ ग्रहण आयोजन का दृश्य।

पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक

कामेश्वर पाण्डेय
पूर्व राजभाषा अधिकारी, हावड़ा मंडल, पूर्व रेलवे, हावड़ा, मो.: 6291102863

जब से मानव का इतिहास है तब से ही यह प्रमाणित एवं स्वयंसिद्ध है कि नारी और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। यह स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसे प्रकृति ने एक सूत्र में बांध रखा है। एक दूसरे के अभाव में दोनों ही अस्तित्व हीन हैं। ब्रह्म और प्रकृति जिस प्रकार एक दूसरे के पूरक हैं उसी प्रकार नारी और पुरुष एक दूसरे के पूरक एवं सहचर हैं। जब ये दोनों दाम्पत्य सूत्र में बंधते हैं तो उन्हें धार्मिक परम्पराओं के अन्तर्गत पंचसूत्री और सप्तसूत्री कसमें खिलायी जाती है। अग्नि को साक्षी मानकर दोनों इन संकल्पों को याद करते हैं और पुनरावृत्ति करते हुए अग्नि की प्रदक्षिणा करके विवाह सम्पन्न करते एवं कराते हैं। यह अद्भुत वैवाहिक परम्परा अति पवित्र एवं संवेदनशील है, जिसका अनुकरण एवं अनुसरण करना हमारी संस्कृति है। दोनों इस पवित्र बंधन को निभाने का वादा भी करते हैं।

वर्तमान परिस्थिति में पाश्चात्य की आंधी में हमारी सांस्कृतिक विरासत को ध्वस्त कर दिया है। अपने अहं और झूठे शान में उन पौराणिक रीति रिवाजों को हम नकार रहे हैं। पत्नी को पति और पति को पत्नी दोनों एक दूसरे को नकार रहे हैं। पवित्र बंधन को तोड़ते उन्हें देर नहीं लग रही है। यह आधुनिकता की देन है। परिणामस्वरूप हमारा सामाजिक स्वरूप अनियंत्रित हो रहा है और हमारी भावी पीढ़ी इससे प्रभावित हो रही है। बात बात पर तलाक देकर हम इस पवित्र बंधन को तोड़ने में देर नहीं कर रहे हैं। पहले तो यह मान्यता थी कि पति के बिना पत्नी का जीवन अधूरा हे, पति उसका संरक्षक है। और यही कारण है कि पत्नियां लाख अत्याचार सहकर भी ससुराल में ही रहना चाहती थी। इसका मूल कारण था कि तब नारी शिक्षा का अभाव था। लेकिन आज जमाना बदल गया है। नारी शिक्षा का प्रभाव बढ़ा है और पत्नियां भी अपने अधिकार का प्रयोग कर रही हैं। वे यह साबित कर रही हैं कि पति अगर उसके बिना रह सकता है तो वह भी पति के बिना रह सकती है।

उसे भी समाज में सर उठाकर प्रतिष्ठा के साथ जीने का अधिकार है। आज किसी भी मामले में महिलाएं पुरुषों से कम नहीं हैं। बड़े-बड़े पदों को सुशोभित करती हुई बड़े-बड़े सामाजिक एवं सरकारी निर्णय ले रही हैं। अगर पुरुषों को बहु विवाह करने की छूट है तो उसे भी यह छूट हो। हालांकि एक बात जरुर है कि इस तनावग्रस्त स्थिति में बच्चे प्यार एवं लाड़-प्यार के अभाव में कुपोषण का शिकार हो रहे हैं। अहं की टकराहट में भविष्य कुठित हो रहा है। बच्चे कुंठाग्रस्त होकर लक्ष्यहीन हो रहे हैं। आज हमें इस अहमियत को समझना जरुरी है और समायोजित होकर इस पवित्र सामाजिक व्यवस्था को निभानी है तभी हम या हमारा समाज बच पायेगा।

भारत धार्मिक परम्पराओं का देश है। हम जिस क्षेत्र में रहते हैं वहां की भाषा खान-पान और रहन-सहन किसी न किसी परम्परा से नियंत्रित होता रहता है। चाहकर भी हम इससे दूरी नहीं बना पाते हैं। हमारे वैवाहिक परम्परा की नींव पूरी तरह वैदिकता पर आधारित है। एक बात जरूर है कि इन आयोजनों में लौकिक रीतियां भी अपना स्थान रखती हैं और यही कारण है कि समस्त भारत भूमि में लौकिक रीतियां भिन्न-भिन्न हैं, लेकिन बुनियादी तौर पर काफी एकता है। हम केवल हिन्दू धर्म की परम्पराओं की चर्चा नहीं करते हैं। बहुआयामी भारत में ईसाई, सिक्ख और मुसलमान भी हैं जो अपनी पारम्परिक रीति रिवाजों से अनुबंधित और नियंत्रित हैं। विवाह चाहे मंडप में हो, चाहे चर्च में हो या गुरुद्वारे में हो, विवाह की पृष्ठभूमि और अहमियत सदा एक जैसी ही रहती है, भले ही लौकिक रीतियां भिन्न है। पति-पत्नी की परिभाषा हर धर्म में एक जैसी है। सुहागन की पहचान केवल सिन्दूर ही नहीं है, सुहागनों की पहचान हर धर्म एवं रीतियों में भिन्न-भिन्न प्रकार की है। लेकिन उनका साथ-साथ रहना और जीवन यापन करना हकीकत है। इसमें शिक्षा और समृद्धि का स्थान गौण है। पति-पत्नी का प्रेम दिली मेल पर स्थापित है। जिस प्रकार धीरे-धीरे दोनों एक दूसरे को समझते हैं उसी प्रकार धीरे-धीरे एक दूसरे पर विश्वास भी करते हैं और सूझ बूझ कर ही कोई निर्णय लेते हैं। स्वाभाविक अनुकरण के आधार पर जीवन की गाड़ी गतिमान रहती है। सांसारिक सुख और वैवाहिक संरचना का आधार ही विश्वास है और यही कारण है कि वही आधारित प्रेम की अनुभूति आदि जीवन भर याद रखती है। वह स्मृति कभी भी धूमिल नहीं होती। बुढ़ापे तक वह प्रेम प्रगाढ़ होते जाता है जिसकी अनुभूति आदमी जीवन के अंत तक करता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि मनुष्य मनोविज्ञान का खिलौना है। उसके मनो मिजाज के तापक्रम का अन्दाजा लगाना मुश्किल है। चाहे

पति हो या पत्नी दोनों में से कोई भी किसी बात से रंज हो सकते हैं लेकिन बहादुरी इसी में है कि समझदारी से काम लेकर इस रिश्ते को कायम रखा जाये बजाये इसके कि उसे तोड़ दिया जाये। आज की भौतिकवादी दुनिया में नैतिकता का ह्रास हो रहा है और क्रोध और अंह आदमी पर हावी हो रहा है। बड़ी बातों को कौन कहे छोटी–छोटी बातों पर भी अंह आड़े आ जाता है और दोनों एक दूसरे से अलग होने तक की ठान लेते हैं। इसमें अहम भूमिका हमारे अकेलेपन की है। हमारा समाज या यूँ कहें कि हमारा दायरा इतना सीमित हो गया है कि हम अपनी समस्या या मन की बात किसी से शेयर भी नहीं करते। फलस्वरूप एकाकी निर्णय का सहारा लेकर संबंध विच्छेद की बात सोचने लगते हैं। अगर हम संयुक्त परिवार में रहते तो हमारा क्रोध भी शान्त होता और हम इस नौबत तक नहीं पहुँचते। हम बड़े शौक से एकाकी जीवन जीते हैं जिसमें हम दो और हमारे दो रहते हैं। तीसरे की एन्ट्री हमें बर्दाश्त नहीं है और पूरा तो नहीं लेकिन कुछ कारण हमारे एकाकी जीवन का जहर है जिससे हम असंवेदनशील होते जा रहे हैं और संबंधों को तिनके के समान तोड़ने में देर नहीं करते।

लघुकथा

हडाई मत करो

श्रीमती सरिता जानू
संस्कृत शिक्षिका, केन्द्रीय विद्यालय क्र.-3, जयपुर

वैवाहिक जीवन के 4 वर्ष कब पूर्ण हो गए पता ही नहीं चला। वैवाहिक जीवन में आपसी सहयोग, प्रेम और छोटी-मोटी तकरार में समय पँख लगाकर उड़ ही जाता है। मेरा 3 वर्ष का पुत्र अभी ठीक से वाक्य भी नहीं बना पाता है, उसके छोटे-छोटे वाक्य मन को प्रफुल्लित तो करते ही साथ ही साथ जीवन में सबक दे जाते। एक दिन मेरी, पति के साथ किसी बात पर तकरार हो गई। वैवाहिक जीवन में तकरार होना सामान्य है। ये छोटी-छोटी तकरार जीवन को बोझिल नहीं होने देती ऐसा हम सोचते हैं जो सही नहीं है। हमारी तकरार शुरू हुई थी कि मेरा बेटा बोला- 'हडाई मत करो'। अभी उसको बोलना भी नहीं आता है। लड़ाई को हड़ाई बोलता था। हमने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। कुछ दिनों के बाद जब बेटा सोने की कोशिश कर रहा था तब हमारी तकरार फिर शुरू हुई और बेटा बोला- 'हड़ाई मत करो, मुझे सोने दो। दोनों गन्दे हो, हड़ाई करते हो'। ये कहते हुए वह सो गया लेकिन उसकी इस छोटी सी बात ने हमें बहुत कुछ सीखा दिया। उस दिन के बाद हमने एक-दूसरे से वादा किया कि हम हड़ाई नहीं करेंगे और आपसी समझदारी से तकरार का मौका नहीं देंगे। पति-पत्नी की छोटी से तकरार से एक अबोध बालक पर इतना नकारात्मक प्रभाव पड़ता है तो आप सोचिए कि बड़ी तकरार या मनमुटाव से क्या प्रभाव पड़ता होगा ?

बच्चों की परवरिश में माता-पिता दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। दोनों मिलकर हड़ाई न करते हुए अपने बच्चे को अच्छे संस्कार के साथ एक बेहतर परिवरिश दें।

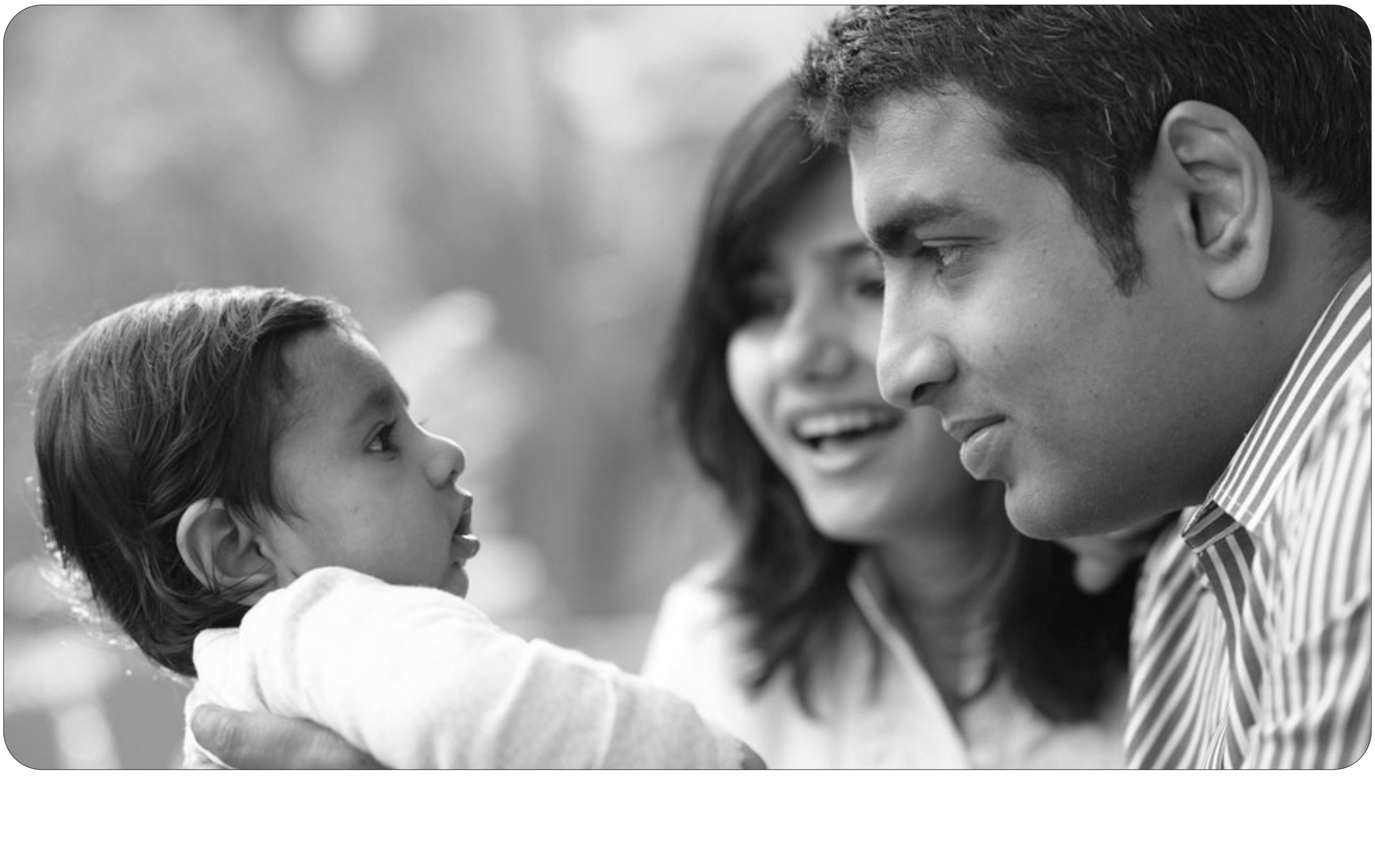

धन्यवाद कहिए

वीरेन्द्र कुमार परिहार
प्रस्तुति सहायक- दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर

मानव जीवन चाहतों और ख्वाहिशों से भरा हुआ है। हम सदैव यह सोचते रहते हैं कि मैं यह भी प्राप्त कर लूं, वह भी प्राप्त कर लूं। महत्वाकांक्षी होना बुरा नहीं हैं। हम हमेशा अधिकाधिक पाने की जद्दोजहद में रहते हैं। हमारी महत्वाकांक्षा कभी समाप्त नहीं होती। हमारा अधिकांश समय और ऊर्जा इसी में निकल जाती हैं।

केवल और केवल पाने की चाहत में क्या कभी हमने सोचा कि जो अब तक मिला है, क्या वह कम है। क्या कभी हमनें यह सोचा कि जो मिला है उसका शुक्रिया, धन्यवाद या साधुवाद भी जरूरी है। हम हमेशा दु:खी इस बात पर रहते हैं कि मुझे यह नहीं मिला, काश मुझे वो भी मिल जाता या मैं जो चाहूं वह मुझे मिल जाए।

हम कभी भी जो मिल गया है या जो भगवान ने हमें दिया है, उसके लिए कभी भगवान का शुक्रिया अदा नहीं करते है। जो कुछ भी भगवान ने हमारी झोली में डाला है उसका आभार प्रकट नहीं करते। यह हमारा स्वभावगत और स्वाभाविक है। इसका कारण यह है कि हमने कभी भी धन्यवाद या शुक्रिया जैसे शब्दों को समझना या स्वीकार करना उचित नहीं समझा या समझा तो प्रकट करना ठीक नहीं मानते। जीवन में शुक्रिया और धन्यवाद जैसे शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान है। शुक्रिया और धन्यवाद कहना शुरू करें। इससे जीवन में एक सकारात्मक बदलाव आएगा। जीवन की गति और तेज होगी। जीवन का आनंद आएगा।

एक बार भगवान के समक्ष खड़े होकर जीवन में जो मिला है, उसके लिए धन्यवाद कहें। उनका साधुवाद करें। ऐसा करने से निश्चित ही आपको आंतरिक प्रसन्नता अनुभव होगी। आपकी आंतरिक ऊर्जा बढ़ेगी। आपका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। बार-बार भगवान का शुक्रिया अदा करने से फिर आपको बार-बार आपका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। बार-बार भगवान का शुक्रिया अदा करने से फिर आपको बार-बार मांगने की जरूरत नहीं होगी। फिर आपको वह सब कुछ मिलेगा जो आप चाहते हैं। आज हम भगवान द्वारा प्रदान किये गए जिन तोहफों का उपभोग कर रहे है उनका आभार जरूर प्रकट करें। प्रकृति प्रदत्त उपहारों का आनंद उठा रहे हैं, उसके लिए तो भगवान का धन्यवाद प्रकट करें।

जीवन में हर छोटी-छोटी सफलता पर शुक्रिया कहना शुरू करें। जो भी व्यक्ति या प्राणी आपके काम आ रहा है उसका पग-पग पर धन्यवाद कीजिए। देखिए निश्चित रूप से सकारात्मक संकेत मिलने शुरू होंगे। जीवन में सकारात्मकता का प्रवेश सुनिश्चित होगा। जीवन रसों से भरेगा। जीवन में निश्चित रूप से एक नई दिशा मिलेगी। हर प्रसंग पर शुक्रिया कहने मात्र में हमारा क्या जाता है। हम शुक्रिया कहने में कुछ नहीं खोते हैं तो फिर आज से ही आभार और शुक्रिया कहना शुरू करें। खोने की जगह ऐसे करने से हम पाएंगे हीं। ऐसा करने से हम जिन छोटी-छोटी बातों से परेशान हो जाते हैं उनमें कमी आएगी। मानव जीवन अमूल्य है। इसके महत्व को समझे।

मानव जीवन को महत्ता को समझिये और इसे लोककल्याण और परमार्थ में लगाईये। देखिए जीवन कितना खूबसूरत होता है। जीवन में नई सकारात्मक तरंगे विकसित होगी। धन्यवाद कहने से अगला भी प्रसन्न होता है। उसे भी एक सकारात्मक आत्म संतुष्टि महसूस होती है। एक और खास बात है कि दूसरों की उपलब्धियों पर प्रसन्नता जाहिर करें। हम हमेशा अपनी उपलब्धियों और अपनी समस्याओं तक ही केंद्रित हो जाते हैं। प्रयास यह रहे कि हम अपने मित्रों, सहकर्मियों और इष्ट जनों की अच्छाइयों की सराहना करें और उनकी उपलब्धियों को स्वीकार करें। इससे ना केवल आपके मित्रों और इष्ट जनों को प्रसन्नता होगी अपितु आपको भी आंतरिक प्रसन्नता का अनुभव होगा। वैसे भी कहा गया है कि दूसरों की खुशी बढ़ाने से बड़ा कोई भलाई का कृत्य नहीं होता है।

यह गुण सकारात्मक व्यक्तित्व का प्रतीक है। सकारात्मक व्यक्तित्व बहुत सारी विशेषताओं से मिलकर निर्मित होता है। छोटी-छोटी सफलताओं को साझा करें। हर छोटी-छोटी सफलता पर आभार प्रकट कीजिए। आभार प्रकट करने से ऐसा लगेगा जैसे आपका भार हल्का हुआ है। आगे बढ़ने की ललक होनी चाहिए। व्यक्ति को महत्वाकांक्षी भी होना चाहिए। आगे बढ़ने का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को है। जीवन में सफलताएं हर कोई प्राप्त करना चाहता है। मानव जीवन अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है।

सार्थक सफलता तभी है जब हम समस्याओं में भी मुस्कुराएं। समस्याओं को हंसते-हंसते स्वीकार करें और उनको पार कर निकल जाएं। यह भी एक सकारात्मक व्यक्तितव की निशानी हैं। जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। उतार-चढ़ाव के दौरान संयम पूर्ण और

विवेकपूर्ण जीवन जीने की आवश्यकता है। आज यह कोराना वैश्विक महामारी ऐसी ही मुसीबत हैं। इस समय संयम पूर्ण आचरण करना हमारी जिम्मेदारी है। स्वयं पर अनुशासन स्थापित कर आचरण करने की आवश्यकता है।

कई दानदाता संकट की इस घड़ी में परोपकारी महान कार्य कर रहे हैं। भगवान से मांगे जरूर लेकिन साथ ही जो भगवान ने दिया है उसका शुक्रिया भी अदा कीजिए। प्रत्येक छोटी-छोटी खुशियों को साझा कीजिए। जब भी हम जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को अपनों के बीच साझा करते हैं तो खुशियां बढ़ती है। हमारा मन सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण होता है। खुशियां तलाशने का यत्न कीजिए। कभी-कभी हम अपनों के बीच खुशियां नहीं ढूंढ पाते है इसलिए जीवन नीरास हो जाता है। प्रसन्नता का कोई सानी नहीं। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वास्थ्यवर्धक जीवन के लिए प्रसन्नता सबसे बड़ी कुंजी है। इसलिए ज्यादा से ज्यादा प्रसन्न रहने का प्रयास कीजिए। देखिए जीवन निश्चित रूप से आनंद से भर जाएगा।

उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर सक्रियता के साथ कार्य करने के लिए प्रसन्नता बेहत जरुरी है। महात्मा बुद्ध ने तो समस्त दु:खों का कारण ही तृष्णा बताया। उन्होंने कहा था कि व्यक्ति यदि दु:खी होता है तो केवल तृष्णाओं के कारण। यदि तृष्णाएं समाप्त तो दु:ख स्वत: ही समाप्त हो जायेगा। चाहतों की तो वैसे कोई सीमा नहीं है।

यूं तो भौतिकवादी इस युग में हमारी चाहतें और इच्छाएं तो कभी समाप्त नहीं होती, परंतु हम इन्हें कम तो कर सकते है।

लॉकडाउन में भी तो हमनें सीमित साधनों और आवश्यकताओं में दिन गुजारे ही हैं। जीवन में न्यूनतम से काम चल सकता है तौ फिर अधिकतम की चाह हर समय क्यों। लेकिन क्या करें, मानव जीवन बड़ा कठिन है। व्यक्ति को कई प्रकार की मनोभावनाओं से गुजरना पड़ता हैं। जीवन की गाड़ी में इसी तरह का संतुलन अनिवार्य है। जीवन का आंनद लीजिये और इसे निर्णायक बनाइए।

बच्चों ! तुम कब आओगे?

मीनाक्षी हल्दानियाँ
प्राथमिक शिक्षिका, केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-3, जयपुर

कोरोना लॉकडाउन के बाद स्कूल में कदम रखते ही, जैसे-जैसे कदम आगे बढ़ते गए वैसे-वैसे कानों में आवाज सुनाई देने लगी गुड मॉर्निंग मैडम, नमस्ते मैडम, आप इतने दिन छुट्टी पर क्यों थे ? आपकी हमें याद आ रही थी। कदम बढ़ते जा रहे थे आवाज से हम दूर होते जा रहे थे। पूरे स्कूल सुनसान, गार्डन हो या खेल का मैदान हर जगह कोई नहीं था क्योंकि बच्चे तो थे ही नहीं। यह सब देख कर मैडम अंजली की आँखों में से जलधारा बह रही थी। मानो कुछ कह रही थी कि हालांकि कुछ भी नहीं बदला बच्चे भी ऑनलाइन आ रहे हैं, पढ़ाई भी सुचारू रूप से चल रही है। लेकिन अभी भी कुछ बात है कि कुछ तो कमी खल रही है। क्योंकि बच्चों का ऑनलाइन आना ठीक उसी तरह से है जैसे कहा गया है ना ''जो बात तुझमें है तेरी तस्वीर में नहीं'' कुछ ऐसा ही मैडम अंजली को महसूस हो रहा था। क्या किया जाए, कहाँ जाए- लगता है अब तो आदत सी हो गई है। अब तो हालात से समझौता करने में ही समझदारी है। यही सोच कर अब हर बच्चें को पढ़ाई से जोड़ने का प्रयास करती। ''बेटा आप ऑनलाइन क्लास क्यों नहीं अटेंड करते ?'' बच्चे से खुद अंजली ने पूछा। मैडम हमारे पास क्लास अटेंड करने के लिए मोबाइल नहीं है। बच्चे ने जवाब दिया। बच्चे से उनके माता-पिता से बात करके कहती- ''बच्चे की शिक्षा एक निवेश है। इसमें जितना निवेश करोगे, उतना ही अधिक पाओगे।'' तथा जिस बच्चे के पास मोबाइल नहीं होता, उनके माता-पिता को मोबाइल की कोरोना काल के दौरान किताब की तरह होने की अहमियत समझाते हुए मोबाइल दिलवाने तथा जो बच्चे सक्षम नहीं होते उन्हें स्वयं दिलवाने का पुण्य कार्य करतीं। किसी के पास यदि कोई खराब मोबाइल होता, जो उसके लिए उपयोगी नहीं है, उसे ठीक करवा कर जरुरतमंद बच्चे को पढ़ने के लिए उपलब्ध करवाती ताकि कोई भी गरीब बच्चा शिक्षा से दूर ना हो सके। धीरे-धीरे दिन बीते, सप्ताह बीते, महीने बीते, देखते ही देखते दो साल बीत गए, मगर बच्चों के स्कूल आने का पता अब तक नहीं था। आज अनलॉक की प्रक्रिया हो रही है, तो कल लॉकडाउन हो रहा है। बच्चों के बिना जैसे सब कुछ सूना-सूना लग रहा है।

ऑनलाइन कक्षा में पढ़ाते वक्त जब भी किसी खेल या स्कूल से संबंधित कोई भी चर्चा चलती तो सहास बच्चों के चेहरे सामने दिखाई पड़ते और बच्चों के चेहरों पर भी यादों की मुस्कान छाई रहती। जिज्ञासा वश पूछते, ''मैडम स्कूल कब खुलेंगे ? हम कब स्कूल आएंगे ? हमें स्कूल की बहुत याद आती है। काफी दिन हो गए हमें हमारे दोस्तों से मिले हुए। हमें स्कूल के गार्डन की बहुत याद आती है, हमें स्कूल के झूले और फिसल पट्टी भी बहुत याद आती है, पानी पीने के बहाने घूमने आना, दूसरी कक्षा में झाँक कर अपने दोस्त को बुलाना, यह सब कुछ याद आता है। मैडम कब आएंगे हमारे वह दिन ?'' बच्चों की दर्द भरी आवाज सुनकर आँखें भर आई हैं। पर बच्चों की तसल्ली के लिए कहा, ''जरूर खुलेंगे बेटा, स्कूल जरूर खुलेंगे। आप चिंता मत करो। आप और हम फिर एक साथ मिलेंगे। फिर वही खुशियाँ स्कूल में आएगीं और स्कूल का चप्पा चप्पा रोशन हो जाएगा।'' बच्चों को कक्षा के दौरान यह बातें ऊपरी मन से जरुर कह देती, लेकिन खुद अंजली मैडम के मन में एक सवाल उठता बच्चों तुम कब आओगे ?

हिंदी हम सब की पहचान

- डॉ. अरविंद कुमार शर्मा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिंदी), केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-3, जयपुर

भाषाओं की जननी हिंदी,
बापू की कथनी में हिंदी,
हम सब की हो करनी हिंदी,
प्यारा होगा हिंदुस्तान,
हिंदी हम सब की पहचान!
हिंदी हम सब की पहचान!!

हिंदी पढ़ेंगे, हिंदी पढ़ाएंगे,
जन-जन तक इसे पहुंचाएंगे,
हर बच्चे के मुँह पर हो ये,
हिंदी पूजे हिंदुस्तान,
हिंदी हम सब की पहचान!
हिंदी हम सब की पहचान!!

हिंदी भाषा सरल है भाई,
फिर पढ़ने में क्यों कोताई,
भारत माँ के भाल की बिंदी,
भारतवासियों की शान,
हिंदी हम सब की पहचान!
हिंदी हम सब की पहचान!!

जब भी बोलो दिल से बोलो,
अलसाए नहीं खिलकर बोलो,
जब भी अपना मुँह खोलो,
हिंदी, हिंदी, हिंदी बोलो,
हिंदी का करना है गुणगान,
हिंदी हम सब की पहचान!
हिंदी हम सब की पहचान!!

हिंदी बिन हिंदुस्तान कैसे,
भाषा बिन पहचान कैसे,
राष्ट्रभाषा का गौरव प्राप्त हो,
हिंदी से होगा हिंदुस्तान,
हिंदी हम सब की पहचान!
हिंदी हम सब की पहचान!!

क्या था देश?

अजय सिंह तोमर
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, कार्यालय मुख्य अभियन्ता, के.लो.नि.वि., जयपुर, मो.: 8882526150

क्या था देश ?

मैंने एक वृद्ध वृक्ष की शाखाओं से पूछा
उनके लिए वायु थी
साँसो के लिए जीवन भर शुद्ध हवा
क्या था देश ?
मैंने गिलहरी के स्नेहिल नयनों में झांका
उनके लिए जग था
एक हरा-भरा सा स्वच्छ जग
मैंने सरहद की तीखी तारों में पाया
वे मौन थी,
उनके लिए धरती, परन्तु दो टुकड़ों में पृथक
मैंने व्यक्तियों की भीड़ से जाना
सबके अनेकार्थ थे।
माँ, मातृभाषा, संस्कृति, धरा व जीवन-यापन में बिखरे।

बल

जिस प्रकार पृथ्वी के भीतर गुरुत्वाकर्षण बल होता है।
उसी प्रकार प्रेम के भीतर भी आकर्षण बल होता है
जो हमारे स्नेह करने या ना करने पर भी अपना कार्य करता है
वह बल प्रेम के प्रति हमें सदैव आकर्षित करता है,
गुरूत्वाकर्षण की तरह।

एक सन्देश

तुंग नाथ त्रिपाठी
वरिष्ठ कार्यकारी (प्रशासन), खादी और ग्रामोद्योग आयोग, रा.का., जयपुर, मो.: 8949174281

हे नभ में विचरण करने वाले,
स्वच्छन्द! स्वेच्छाचारी! निजाश्रित!
परयुक्त मित्र, रूक जाओ, क्षण भर के लिए,
कण्ड कर लो-मेरा भी- ''एक सन्देश''
पहुंचा देना- इसे, जल, थल, नभ के उस पार,
- जहां पर न हो, पंचत्व से बना हुआ-
यह- स्वार्थी, मर्त्य, अहंकारी, दोषी, लोभी,
-अनेक विशेषणों, से युक्त-विशेषज्ञ,
-जहाँ हो केवल-वित्त वृत्त,
-जहां हो केवल-वृत्त और वृत्त,
-जिसने पाया अमरत्व, जिसने पाई है- मुक्ति- हमेशा वित्त वृत्त से,
-जिसको छू पाया है- न स्वार्थ न अहंकार,
न दोष न लोभ न माया मोह का प्रपंच।
-जो है तुम्हारी तरह- बिल्कुल स्वछन्द।
कर देना अर्ज-उस परम पूर्ण से- निभा देना फर्ज,- उस शूरवीर से,
इस अधमलोक का- विस्तृत विवरण देकर,
कहना-उद्धार करें जल्दी इस लोक का,
नाता रिश्ता-पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन आदि का,
कलुषित किया सब स्वार्थ के विचार ने, आदमी का भक्षण कर आदमी को तृप्ति मिले,
आया है उस युग का एक खण्ड, जो इतिहासों के प्रथम पृष्ठ पर,
आज भी अंकित है, आपके द्वारा प्रेषित समस्त ''दूत''
आये व चले गये- इस मर्त्यलोक से,
कल्पना विचार बना, बन विचार नष्ट हुआ,
साकार करने के लिए, उनकी कल्पनाओं को,
अति आवश्यक है-आपके! खुद आने की।

फूल और तितली

ममता रेबारी
MA, जिओग्राफी BE, Edu., पुत्री मगाराम, वरि. लिपिक

कभी इस फूल तो कभी उस फूल
कभी गुलाब तो कभी मोगरा
हर फूल का रस लेती हैं ''तितली''
बदले में न जाने क्या देती हैं तितली
फिर भी हर फूल का रस लेती हैं तितली
जीवन इसका कितना मनोरम
झूमे हर डाल-डाल पात-पात
अपनी ही मस्ती में हर गली-मोहल्ले में
हर बाग-बगीचे में उड़ती-फिरती दिखती हैं तितली
कितनी सुंदर ये काली-नीली, चमकीली-पीली
उड़ती रहती खिली-खिली
हर पल वो, हर पल वो
इसे ही तो कहते हैं मस्ती हैं मिजाज में।।

जिंदगी

शकुंतला शर्मा
प्राथमिक शिक्षिका, केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-3, जयपुर

कितनी अजीब बात है
जिंदगी एक सवाल है
कहें तो पाने को कुछ नहीं
जो हमें ले जा सके
खोने को कुछ नहीं
जिसे खो कर पछता सकें
खाली हाथ है जाना
फिर भी रात-दिन है कमाना
उड़ जाएंगे एक दिन
पता भी नहीं कब है जाना
सिर्फ तस्वीर रह जाएगी
फीके रंगों की तरह
वक्त बहता जा रहा
छूटी नाव की तरह
वक्त जो न रोके से रूके
ना थामे से थमे
बस हम देख रहे उसे
अनजान परिन्दों की तरह
अगर देखें तो गहरा
राज है जिन्दगी
ना समझे तो
सरल और आबाद है जिन्दगी
जो इसमें डूबा गहरा समुद्र
और अथाह भण्डार है जिन्दगी
बेबस लाचारों के लिए
तलवार की धार है जिन्दगी
हम परिन्दे वक्त की टहनी पर बैठे
हमारे लिए इंतजार है जिन्दगी
जी लो इसे जी भर के
जैसे आखिरी बार हो जिन्दगी
अगर कहे तो ना राज, ना काज
जो कुछ है वो, बस आज है जिन्दगी।

उठो नारी तुम कमजोर नहीं हो

श्रीमती सरिता जानू
संस्कृत अध्यापिका के.वि.क्र.-3, जयपुर

जगत की उत्पत्ति का आधार हो तुम
प्रेम और वात्सल्य का सागर हो तुम
मातृत्व का आधार हो तुम, फिर कैसे कमजोर हो तुम......
संगीत में साज हो तुम
घर-घर में लाज हो तुम
घर में सरताज हो तुम, फिर कैसे कमजोर हो तुम......
पति की सावित्री हो तुम
घर की लक्ष्मी हो तुम
घर-घर की तुलसी हो तुम, फिर कैसे कमजोर हो तुम......
हर व्याधि की औषध हो तुम
हर घर की बरकत हो तुम
हर घर की शान ए शौकत हो तुम, फिर कैसे कमजोर हो तुम......
तुम से ही सुख-समृद्धि
तुम से ही रिद्धि-सिद्धि
तुम से ही गति-प्रगति, फिर कैसे कमजोर हो तुम......
तुम किसी की परछाई नहीं हो
तुम किसी की अर्धांगिनी नहीं हो
तुम साक्षात शक्ति का पूर्ण रूप हो, फिर कैसे कमजोर हो तुम......
उठो नारी तुम कमजोर नहीं हो।

अपनी प्यारी भाषा हिन्दी

शिवानी शुक्ला
वरिष्ठ तकनीकी सहायक, केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर

वो हिन्द ही तो है
जहाँ हिन्दी प्रेम की भाषा बनकर बिखरी है
जैसे गंधराज की खुशबू बागों को महकाती है
वहीं हिन्दी भारतीयों के दिलों को
तुलसी के मानस में राम की मर्यादा दिखलाती है हिन्दी
सूर के श्याम की अटखेलियाँ बनवाती है हिन्दी
भारतीयों की आस्था में इस कदर गुंथी है हिन्दी
भारत की आजादी में वन्दे मातरम् बनकर अंग्रेजों के कानों में गूँजी थी हिन्दी
हतात्माओं के साहस को इतिहास में अमर करती हिन्दी
हिन्दी सिर्फ भाषा नहीं स्व-उत्सव है
जो कोटि-कोटि भारतीयों की शुभकामनाओं के रूप में सभी को मिलता है
हिन्दी वो प्रेममयी दीपक है
जो कवि के दिल में गंगाघाट की आरती की तरह जलता है
हिन्दी में वतन की खुशबू है जो दिनों को जोड़ती हुई
हर भारतीय में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को
आज भी बखूबी कायम रखती है।

''दुनिया एक मेला है''

अरविंद कुमावत
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर, मो.: 9351836334

दुनिया एक मेला है
जाने कौन-कौन अकेला है
किसी ने सारा खेल समझा
कोई यूं ही खेला है
जीवन एक मेला है
जाने कौन-कौन अकेला है
सावन के खिलखिलाते फूल पतझर आते आते टूट गये
जीवन की शाख के पत्ते, जेठ दुपहरी में सूख गये
उसने उतनी भीड़ जुटाई, जो यहाँ जितना अकेला है
दुनिया एक मेला है, जाने कौन-कौन अकेला है
शह्र का शहर खाली हुआ है
सड़कों पे फिर से रेला है
दुनिया एक मेला है, जाने कौन-कौन अकेला है...।

कविता

कोरोना महामारी और हमारी बारी

योगिता शर्मा
आयकर अपीलीय अधिकरण, जयपुर न्यायपीठ, जयपुर, मो.: 9461436139

दुनिया में कैसी आफत है आई
कोरोना महामारी की बीमारी है छाई।
समाज में इसने दूरियां बढ़ाई
दुनियां में कैसी बीमारी है छाई।

हा-हाकार मच रहा, सब दे रहे दुहाई
बैंकों में कैसी भगदड़ है मचाई।
हमारी बारी आने पर हकीकत समझ आई
मिठाईयां सड़ रही और भा रही दवाई।

पहली बार देखा है ऐसा लॉकडाउन
मीटर है चालू और अर्थव्यवस्था हुई डाऊन।
रुपया है नीचे और ऊपर है पाउंड
मजदूर भटक रहे और शटर है डाऊन।

स्कूल हुए बंद, पर फीस है चालू।
जिन्दगी हुई सस्ती और महंगे हुए आलू।

इस लॉकडाऊन के साथ एक अच्छी बात है आई
अपनों की अपनों के साथ बारी आई।
बच्चों की मम्मी बनाये खाना, तो पापा बनाये मिठाई।
इन छोटे-छोटे पलों के साथ परिवार में खुशियां छाई।

इस कमान की होड में, जिन्दगी सारी बिताई।
असली खुशी परिवार में, ये बात अब समझ में आई।
फिर भी शादी से पहले पूछ रहे, लड़के की कमाई,
सरकारी नौकरी या किराने की दुकान है क्या भाई।

निकल आये लूडो और सांप सीढ़ी
साथ बैठ कर खेल रही, देखो तीनों पीढ़ी।
पर कुछ बच्चों ने खो दिया अपनों का साया
ये कैसा कोरोना ने कोहराम है मचाया।

ई-पेमेंट, एटीएम ने खूब साथ निभाया,
फिर भी बैंकरी पर कोरोना ने खूब कहर ढाया।
बैंकर, पुलिस, डॉक्टरों पर, ऐसी आफत आई
लोग घरों में सेफ हुए, पर इन्होंने ड्यूटी पूरी निभाई।

स्कूल ऑफिस बंद हुए, काम हुआ ऑनलाईन,
फिर भी हॉस्पिटल और बैंकों में बढ़ रही है लाईन।
कहीं छुट्टी की खुशी, तो कहीं अपनों का गम
कहीं पुरखों की खान, तो कहीं रोजीरोटी हुई कम।

कोई लॉकडाउन में कमाने जाये, तो लाठी खा कर आये
कोई बंद दुकान में भी, शटर के नीचे से कमाये।

कोई शादी में परी दिखने के ख्वाब सजाये
तो कोई शादियों में सदस्यों की, संख्या गिनने आये।
शादी में दुल्हे की घोड़ी के आगे, कोई नाच ना पाये
तो कहीं शादी में परी और शहजादे को घर वाले ही देखते नजर आयें।

घोड़ी-बाजे, कैटरिंग सब हुए बेकार,
शादियों का दिखावा, अब हुआ निराधार।
मॉल, सिनेमा के बिना भी चल रही जीवन की गाड़ी,
बिना लोग जिमाये भी, लाडा ले आया लाडी।

कोरोना वायरस ने दुनिया में नये-नये रंग दिखाये है,
ब्लैक फंगस, यलो फंगस और अब डेल्टा रूप में वायरस छाये हैं।
ऐसा लगता हे, ये सब क्या भारत में होली खेलने आये हैं।

अब बस बहुत हुआ कोरोना से घुट रहा दम,
जिन्दगी हुई छोटी और सांसे हुई कम।
अब जिन्दगी की गाड़ी, पहले जैसी पटरी पर चाहिए
तो कोरोना का टीका लगवाइए,
बार-बार हाथ धोते रहिए और मास्क लगाइए
और कोरोना वारियर्स का साथ निभाते जाइए।

अच्छी बातें

पवन कुमार वर्मा
सहायक वित्त सलाहकार, उ.प. रेलवे, कार्यशाला, बीकानेर

(1)

शरीर में कोई सुन्दरता नहीं है
सुन्दर होता है, व्यक्ति के कार्य
उसके विचार, उसकी वाणी
उसका व्यवहार, उसके संस्कार
और उसका चरित्र
उसके जीवन में यह सब है
वही इंसान दुनिया का सबसे
सुन्दर शख्स है।

(2)

किसी के लिए साड़ी, किसी के लिए
सलवार सूट... किसी के लिए जींस
आरामदायक है।
कोई निभाना चाहती है रीति रिवाज
किसी के लिए यह एक बंधन है।
उड़ना चाहती है कोई आवाज हवा में
किसी के लिए अपनी मिट्टी ही अपनापन है
संस्कारों की परिभाषा हर किसी के लिए
अलग-अलग होती है, मत तो लिए अपनी सोच से...
उसकी भी अपनी सोच होती है।

सूक्ति कोश

1. अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। –अथर्ववेद
2. अतिथि सत्कार से इंकार करना ही सबसे बड़ी दरिद्रता है। –इमर्सन
3. अतिथि–सत्कार मनुष्य का परम कर्त्तव्य है, इससे मनुष्य को देवत्व प्राप्त होता है। –बाइबिल
4. बाधा जितनी बड़ी होगी , अवसर उतना ही बड़ा होगा। –शिवखेड़ा
5. उचित समय पर काम करने वाले का ही श्रम सफल होता है। –आचरांग चूर्णि
6. असफलता निराशा का सूत्र कभी नहीं है, अपितु वह तो नई प्रेरणा है। –साउथ
7. अस्पृश्यता हमारे देश और समाज के लिए मस्तक पर कलंक है। –वीर सावरकर
8. जिसने अहंकार छोड़ दिया, वह भवसागर तर गया। –योग वाशिष्ठ
9. अहंकार के समूल नाश से तृष्णाओं का अंत हो जाता है। –महात्मा बुद्ध
10. अहंकारी का विनाश जरूर होता है। –तुलसीदास
11. सुंदर आचरण, सुंदर शरीर से अच्छा है। –एमर्सन
12. आचरण के बिना ज्ञान केवल भार मात्र ही होता है। –हितोपदेश
13. पढ़ना एक गुना, चिंतन दो गुना, आचरण चौगुना । –विनोबा भावे
14. स्कूल आचरण का कारखाना है। –महात्मा गाँधी
15. ज्ञानी वह है जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे। –विनोबा भावे
16. आत्मा– विश्वास सफलता का मुख्य रहस्य है। –एमर्सन
17. आत्मा– विश्वास का अर्थ है, अपने काम में अटूट श्रद्धा। –महात्मा गाँधी
18. आत्मा– विश्वास का अभाव ही सभी अंधविश्वासों का जनक है। –ओशो
19. आत्म सम्मान समस्त गुणों की आधार शिला है। –सर जॉन हरशल
20. सुख भोग की लालसा, आत्म सम्मान का सर्वनाश कर देती है। –प्रेमचंद
21. बिना अपनी स्वीकृति के कोई मनुष्य आत्म सम्मान नहीं गंवाता। – महात्मा गाँधी
22. मैं आत्मा हूँ मुझे पराजित नहीं कर सकता । –ऋग्वेद
23. मैं वही करता हूँ जो मेरी आत्मा कहती है। –हिटलर
24. आत्मा परमात्मा का अंश मात्र है। –स्वामी विवेकानंद
25. केवल आत्मज्ञान ही हृदय को सच्चा आनंद प्रदान करता है। –रामतीर्थ
26. संयम और त्याग के रास्ते से ही आनंद और शांति तक पहुँचा जा सकता है। –आइन्स्टीन
27. आनंद के अवसर पर हम अपने दु:खों को भूल जाते हैं। –प्रेमचंद
28. जीवन है तो आनंद है, और परिश्रम है तो जीवन है। –टॉलस्टाय
29. आलस्य एक प्रकार की हिंसा है। –महात्मा गाँधी
30. आलस्य का एक मात्र इलाज है, काम करो। –रदरफोर्ड
31. आलस्य मनुष्यों के शरीर में रहने वाला घोर शत्रु है। –भर्तृहरि
32. आलस्य में जीवन बिताना आत्म हत्या के समान है। –सुकरात
33. परिश्रम ऋण को चुकाता है, आलस्य उसे बढ़ाता है। –विवेकानंद
34. आलस्य परमेश्वर के दिए हुए हाथ–पैरों का अपमान है। –अज्ञात
35. आलस्य वह रोग है, जिसका रोगी कभी नहीं संभलता। –प्रेमचंद
36. आशा उत्साह की जननी है, आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालन शक्ति है। –प्रेमचंद
37. आशा अमर है। उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती । –महात्मा गाँधी
38. जो अन्य से आशा नहीं करता, वही शूर है। –तुकाराम

39. इच्छाएँ कभी तृप्त नहीं होतीं । अत: इनको नियंत्रित रखो । -विवेकानंद
40. मानव की आवश्यकता पूर्ण हो सकती है, इच्छा नहीं । यही ईश्वरीय नियम है । -जार्ज बर्नार्ड शॉ
41. हमारी इच्छाएँ जितनी ही कम हों उतने ही हम देवताओं के समीप हैं । -सुकरात
42. इच्छा और आँसू जुड़वां बहनें हैं । -साधु वासवानी
43. ईमानदार होना दस हजार में एक होना है । -शेक्सपीयर
44. बड़ी से बड़ी सम्पत्ति ईमानदारी के सामने तुच्छ है । -शेक्सपीयर
45. मनुष्य की प्रतिष्ठा ईमानदारी पर ही निर्भर है । -श्रीराम शर्मा आचार्य
46. जो ईश्वर को पा लेता है, वह मूक और शान्त हो जाता है । -रामकृष्ण परमहंस
47. भगवान दुखियों से अत्यंत स्नेह करते हैं । -जय शंकर प्रसाद
48. ईश्वर से अधिक निकटतम कोई वस्तु नहीं है । -स्वामी रामतीर्थ
49. महापुरूष वही हैं, जिनके उद्देश्य महान होते हैं । -ईमन्स
50. बिना शारीरिक उन्नति के आध्यात्मिक उन्नति असंभव है । -रामकृष्ण परमहंस
51. वही मनुष्य उन्नति कर सकता है, जो स्वयं को उपदेश देता है । -स्वामी रामतीर्थ
52. मैं संस्कारों में विश्वास नहीं करता स्वाभाविक उन्नति का विश्वासी हूँ । -विवेकानंद
53. उपकार करने के लिए यदि कुछ जाल भी करना पड़े तो उससे आत्मा की हत्या नहीं होती । -प्रेमचंद
54. जो किसी का उपकार नहीं कर सकते, उनके जीवन को धिक्कार है । -रघुवंश (कालिदास)
55. जिसने तुम्हारा उपकार किया हो, यदि वह बड़ा अपराध करे तो भी उसके उपकार की याद करके उसका अपराध क्षमा कर दो । -महाभारत
56. उदाहरण प्रस्तुत करना उपदेश देने से अच्छा है । -अंग्रेजी लोकोक्ति
57. अगर चिड़ियाँ एका कर लें तो शेर की खाल खींच सकती हैं । -शेखसादी
58. चित्त एकाग्र हुए बिना ध्यान और समाधि कठिन है । -मनुस्मृति
59. प्रत्येक कार्य पर विजय पाने के लिए एकाग्रचित होना आवश्यक है । -मार्ले
60. ऐश्वर्य ईश्वर का विशेष गुण है । -विनोबा भावे
61. नम्रता के संयोग से ऐश्वर्य की शोभा बढ़ जाती है । -कालिदास
62. मनुष्य की सेवा मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है । -विनोबा भावे
63. कर्त्तव्य कठोर होता है, भाव प्रधान नहीं । -जयशंकर प्रसाद
64. जब हम कोई काम करने की इच्छा करते हैं तो, शक्ति आप ही आ जाती है । -प्रेमचंद
65. कर्म वह दर्पण है, जिसमें हमारा प्रतिबिम्ब दिखता है । -विनोबा भावे
66. मूर्खो को ही क्रोध होता है , ज्ञानियों को नहीं । -विष्णु पुराण
67. क्रोध में आदमी अपने मन की बात नहीं कहता । वह केवल दूसरे का दिल दुखाना चाहता है । -प्रेमचंद
68. गुस्से का बेहतरीन इलाज खामोशी है । -स्वामी विवेकानंद
69. क्षमा करना अच्छा है । भूल जाना सर्वोत्तम है । -राबर्ट ब्राउनिंग
70. क्षमा का कवच पहन लो, निन्दक के तीर व्यर्थ हो जायेंगे । -तुलसीदास
71. किसी के दुर्वचन कहने पर क्रोध न करना ही क्षमा कहलाता है । -स्वामी विवेकानंद
72. क्षमा बड़ों का धर्म है । छोटों का काम उत्पात करना है । -रहीम
73. गुण सब स्थानों पर अपना आदर करा लेता है । -कालिदास
74. गुणियों की जात-पांत नहीं देखी जाती । -प्रेमचंद
75. ज्ञान दाता गुरु की निन्दा करना तो दूर निंदा सुननी भी नहीं चाहिए । -चाणक्य
76. गुरु के आसन पर मनुष्य नहीं स्वयं परमात्मा आसीन हैं । -निराला
77. सच्चा गुरु अनुभव है । -विवेकानंद
78. एक मात्र ईश्वर ही विश्व का पथ-प्रदर्शक और गुरु है । -रामकृष्ण परमहंस
79. बिना गुरु के ज्ञान नहीं होता । -तुलसीदास
80. जिसने गर्व किया उसका पतन हुआ । -विवेकानंद

उत्तर पश्चिम रेलवे
आज़ादी का अमृत महोत्सव
अच्छे नागरिक का फ़र्ज़ निभाएं,
रेल यात्रा के दौरान गंदगी न फ़ैलाएं
आसपास न थूकें
कचरा कूड़ेदानों में डालें
खुले में एवं पटरियों पर शौच न जाएं
KEEP STATION CLEAN
USE DUSTBIN
USE ME
www.nwr.indianrailways.gov.in
/NWRailways
NWRailways_

आज़ादी का अमृत महोत्सव
उत्तर पश्चिम रेलवे के 28 स्टेशनों
एयरपोर्ट समकक्ष प्रकाश व्यवस्था
"पीछे की रोशनी देख कर
एयरपोर्ट समझी क्या
रेलवे स्टेशन है ये"
हमें फॉलो करें : /NWRailways
www.nwr.indianrailways.gov.in
उत्तर पश्चिम रेलवे

"अनाधिकृत रूप से रेलवे ट्रैक पार ना करे,
यह जानलेवा हो सकता है"
"सावधान रहें, सुरक्षित रहें"
महोत्सव
इस तरह से रेलवे ट्रैक पार
मैं करेगा...... नहीं
उत्तर पश्चिम रेलवे
www.nwr.indianrailways.gov.in

उत्तर पश्चिम रेलवे
Azadi Ka Amrit Mahotsav
सुरक्षा से नाता जोड़ें !
प्लेटफार्म पार करने के लिए सदैव
फुट-ओवर ब्रिज/सबवे/अंडरपास
का प्रयोग करें
TIME 10:46 DATE 24.06.16
WI-FI
शयनयान
SLEEPER
हमें फॉलो करें :
/NWRailways
www.nwr.indianrailways.gov.in